

न्यूज विंडो

ऑल इंडिया कराटे चैंपियनशिप में हैदर रिजवी ने जीता कांस्य पदक

भोपाल। इंदौर में हुई ऑल इंडिया कराटे चैंपियनशिप में भोपाल के युवा कराटे खिलाड़ी हैदर रिजवी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए कांस्य पदक हासिल किया। रिजवी ने कराटे काता वर्ग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए यह उपलब्धि हासिल की। उनकी इस सफलता से परिवार, कोच एवं साथी खिलाड़ियों में खुशी का माहौल है। हैदर रिजवी एमके अकेडमी ऑफ मार्शल आर्ट्स एंड सेल्फ डिफेंस सेंटर भोपाल में कोच मतीन खान के मार्गदर्शन में कराटे का प्रशिक्षण ले रहे हैं। वे पहले भी हैदर जिला एवं राज्य स्तर की प्रतियोगिताओं में पदक जीत चुके हैं।



शादी से पहले फांसी लगा ली, कारण का नहीं चल सका, केस दर्ज

भोपाल। छोला मंदिर थाना क्षेत्र में एक युवक ने फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। मृतक की कुछ समय पहले ही एगोजमेंट हुई थी और जल्द ही शादी होने वाली थी। थाना प्रभारी सरस्वती शिवहरे ने बताया कि रितिक पीटर (25) कल्याण नगर में रहता था और प्राइवेट ड्राइवर था। रविवार शाम वह अपने कमरे में था। परिजनों को इसकी जानकारी नहीं मिली। शाम करीब साढ़े सात बजे परिजनों ने उसे घर में फांसी के फंदे पर लटकता देखा। सभी उसे तत्काल अस्पताल ले गए। यहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। उसके अचानक आत्महत्या करने की वजह किसी को समझ नहीं आ रही है। पुलिस ने रितिक का मोबाइल फोन जब्त कर लिया है। अभी तक कोई सुसाइड नोट भी नहीं मिला है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।



इयूटी में लापरवाही पर महिला आरक्षक की वेतनवृद्धि रोकी

भोपाल। एमपी नगर चौहाने पर इयूटी के दौरान यातायात संचालन में लापरवाही बरतने पर पुलिस कमिश्नर संजय कुमार ने महिला आरक्षक वंदना की एक वेतनवृद्धि एक वर्ष के लिए रोकने के आदेश दिए हैं। पुलिस कमिश्नर संजय सिंह को रविवार को भ्रमण के दौरान एमपी नगर चौहाने पर आरक्षक वंदना यातायात संचालने के बजाय सड़क किनारे खड़ी मिली। इस पर स्पष्टीकरण मांगा तो जवाब मिला, चौहाने पर चारों तरफ से तेज गति से वाहन आते हैं, दुर्घटना का खतरा रहता है। कमिश्नर संतुष्ट नहीं हुए।



कोहेफिजा पुलिस ने दो जिला बदमाशों को किया गिरफ्तार

भोपाल। जिलाबदर के आदेश के बावजूद भोपाल में घूम रहे बदमाश राकेश सचदानी उर्फ राहु (38) को कोहेफिजा पुलिस ने गिरफ्तार किया है। आरोपी पर 20 से ज्यादा अपराध दर्ज हैं। वह क्राइम ब्रांच भोपाल में दर्ज सड़के के एक मामले में कई महीनों से फरार चल रहा था। राकेश सचदानी के असामाजिक गतिविधियों में लगातार संलिप्त रहने के कारण पुलिस आयुक्त नगरीय पुलिस भोपाल के न्यायालय से उसके खिलाफ जिलाबदर की कार्रवाई की गई थी।



तुलसी नगर में ट्रैफिक सुधार के निर्देश- स्ट्रीट लाइट भी दुरुस्त करें



भोपाल। तुलसी नगर स्थित वार्ड क्रमांक 31, जोन-7 में नागरिक सुविधाओं और सुगम यातायात को लेकर पार्षद ब्रजुला सचान ने क्षेत्र का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों को आवश्यक व्यवस्थाएं दुरुस्त करने के निर्देश दिए। तरुण मार्केट के सामने सड़क पर खड़ी मैकेनिक की गाड़ियों को तत्काल हटाने को कहा गया, ताकि यातायात सुचारु रह सके। सड़क के दोनों ओर कंक्रीट कार्य भी कराया जा रहा है, जिससे मार्ग पैदल चलने वालों को अतिरिक्त सुविधा मिलेगी। दुकानों और मकानों के आसपास उगी झाड़ियों व बड़े पेड़ों की आवश्यक छंटाई, सफाई, नालियों की नियमित सफाई और कचरे का समय पर उठाव सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। स्ट्रीट लाइट और रहवासी गार्डन की नियमित देखरेख पर जोर दिया गया।

पितरों के लिए श्रीमदभागवत कथा निकाली कलश यात्रा



भोपाल। पितृपक्ष में गायत्री किराना स्टोर के संचालक सेमरा नवयुवक व्यापारी संघ के पूर्व अध्यक्ष छोटे भाई रविंद्र कुशवाहा के पिता सी.एल. कुशवाहा व गायत्री कुशवाहा के मुख्य यजमान में आज श्रीमदभागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है। इसमें बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने हिस्सा लिया। इसके लिए कलश यात्रा भी निकाली गई।



मास्टर प्लान 2047 के ड्राफ्ट पर आई 67 आपत्तियां और सुझाव

बाघ टेरिटरी में सड़क सही नहीं जमीन ली तो घट जाएगी खेती

33 सुझाव टीएंडसीपी वेबसाइट पर	30 सुझाव नगर एवं ग्राम निवेश के मेल पर	02 सुझाव ऑफलाइन मोड से	02 कलेक्ट्रेट में एसडीएम के पास
-------------------------------	--	------------------------	---------------------------------

भोपाल। दोपहर मेट्रो

सुप्रीम कोर्ट की सख्ती के बाद जारी भोपाल के मास्टर प्लान-2047 का ड्राफ्ट 5.1 किमी के ग्रोथ कॉरिडोर, मिश्रित भू-उपयोग, सड़क की चौड़ाई के आधार पर व्यावसायिक गतिविधियों, अधिक एफएआर और करीब 27 प्रतिशत हरित क्षेत्र का प्रस्ताव है। निवेश क्षेत्र को 1016.90 वर्ग किमी तक बढ़ाने और 254 गांवों को इसमें शामिल करने का भी प्रावधान किया गया है। ड्राफ्ट आने के बाद इसका विरोध भी शुरू हो गया है। शहर के पर्यावरणविदों और नागरिकों का कहना है कि प्लान में कई ऐसे प्रावधान हैं, जिन पर आपत्ति दर्ज कराना जरूरी है। टीएंडसीपी और जिला प्रशासन के पास दावे-आपत्तियों का सिलसिला भी शुरू हो गया है। 30 दिन चलने वाली इस प्रक्रिया में अब तक 67 आपत्तियां व सुझाव आए। सबसे ज्यादा टीएंडसीपी वेबसाइट पर आईं।

इन बिंदुओं पर ज्यादा आपत्तियां संभंव

- 1. ग्रोथ कॉरिडोर..** नर्मदापुरम रोड से इंदौर रोड तक 5.1 किमी के ग्रोथ कॉरिडोर का प्रस्ताव है। प्रभावित जमीन मालिकों की आपत्ति टैंडयुज में बदलाव, सड़क चौड़ीकरण व भविष्य में विकास के कारण संपत्ति पर पड़ने वाले असर को लेकर हो सकती है।
- 2. ड्राफ्ट में** सड़क की चौड़ाई के आधार पर एफएआर व भवन निर्माण की संभावनाएं तय करने का प्रस्ताव है। अधिक चौड़े मार्गों पर एफएआर, भवन ऊंचाई की सीमा में बड़ी छूट का प्रावधान है। पानी, सीवेज, बिजली, सड़क जैसी सुविधाओं की मांग उठ सकती है।
- 3. 27 प्रतिशत हरित क्षेत्र** भोजताल, जलग्रहण क्षेत्र, पहाड़ियों, वन क्षेत्रों, बाघ भ्रमण क्षेत्रों के संरक्षण पर भी जोर दिया है। चंदनपुरा में 60 मीटर चौड़ी सड़क का प्रावधान। ऐसे में सड़क निर्माण, चौड़ीकरण से निर्माण बढ़ेगा। पूछा जा सकता है, सड़क निर्माण व चौड़ीकरण से वन्यजीव प्रभावित नहीं होंगे।
- 4. ड्राफ्ट में** निवेश क्षेत्र को 1016.90 वर्ग किमी तक विस्तार और 254 गांवों को इसमें शामिल करने की बात सामने आई है। आपत्ति हो सकती है कि नए क्षेत्रों में सड़क-पेयजल, सीवेज, स्वास्थ्य, स्कूल, परिवहन कैसे उपलब्ध कराए जाएंगे।

ये सुझाव भी आए

वन विभाग के पूर्व एसडीओ आरएस भदौरिया ने विकास के साथ प्राकृतिक विरासत को बचाने का सुझाव दिया है। कहा, भोपाल की पहचान तालाब, पहाड़ियां, हरियाली, खुले वातावरण से है। सभी तालाबों, कैचमेंट को सुरक्षित, पहाड़ियों पर निर्माण पर रोक लगे। कलियासीत-करवा तक इकोलॉजिकल कॉरिडोर बनाएं। पर्यावरणविद् राशिद नूर का कहना है कि बाघ भ्रमण वाले क्षेत्रों को संरक्षित करने की बात कही है, लेकिन वहां सड़कों के निर्माण का प्रावधान नहीं हटाया। यदि सड़कों बनेगी तो मकानों, दुकानों का निर्माण होने की आशंका है। इसी मुद्दे पर आपत्ति दर्ज करवाऊंगा। पूर्व मंत्री पीसी शर्मा का कहना है कि ड्राफ्ट में जो गांव लिए जा रहे हैं, लेकिन उनकी विकास योजना स्पष्ट नहीं है। गांवों में किसानों की खेती की जमीन लिए जाने से कृषि भूमि कम होगी। इस पर आपत्ति दर्ज करवाई जाएगी।

राजस्व रिकॉर्ड में आफताब जहां का नाम नहीं होने का दावा

रियाज मंजिल को शत्रु संपत्ति मानने पर उठाए सवाल कब्जेदारों ने सौंपा जवाब, अब 6 को होगी सुनवाई

भोपाल। दोपहर मेट्रो

खानूगांव स्थित ऐतिहासिक रियाज मंजिल कोठी और खसरा क्रमांक 42 को नवाब हमीदुल्लाह खान की दूसरी पत्नी आफताब जहां बेगम की संपत्ति मानकर शत्रु संपत्ति के रूप में की जा रही कार्रवाई के बीच नोटिस धारियों ने जवाब दखिल कर दिया है। प्रभावित कब्जाधारियों ने न्यायालय सहायक अभिरक्षक शत्रु संपत्ति एवं एसडीएम (बैरागढ़) रवीश श्रीवास्तव के समक्ष नोटिस का जवाब प्रस्तुत किया। जवाब में संपत्ति के मूल स्वामित्व से लेकर 29 अप्रैल 2024 के शत्रु संपत्ति प्रमाण-पत्र की प्रामाणिकता पर सवाल उठाए गए हैं। अब सुनवाई 6 अक्टूबर को होगी।



घर बचाओ संघर्ष समिति के उप संयोजक एडवोकेट जगदीश छावानी ने बताया कि मोहम्मद यूसुफ खान की ओर से उनके अधिवक्ता खालिद हफीज समेत कुछ नोटिसधारियों ने आपत्तियां पेश की हैं। इसमें कहा है, जिस खसरा क्रमांक 42 की रियाज मंजिल को आफताब जहां बेगम से जोड़कर कार्रवाई की जा रही है, उपलब्ध शासकीय

राजस्व अभिलेखों में यह भूमि उनके नाम दर्ज होना प्रदर्शित नहीं होता। नोटिसधारियों का दावा है कि इसका संबंध नवाब हमीदुल्लाह खान और उनके बाद उनकी उत्तराधिकारी नवाब बेगम साजिदा सुल्तान से रहा है।

निवास करना और कानूनी स्वामित्व दोनों अलग-अलग

नोटिसधारियों की ओर से यह तर्क भी दिया गया है कि किसी व्यक्ति का किसी कोठी में निवास करना और उस संपत्ति का विधिक स्वामी होना अलग-अलग बातें हैं। इसी आधार पर रियाज मंजिल के स्वामित्व से जुड़े राजस्व अभिलेखों और दस्तावेजों के परीक्षण की मांग की गई है।

मेट्रो एंकर

उपभोक्ता आयोग का फैसला, होम लोन के साथ करवाया गया था बीमा, कंपनी पर जुर्माना भी लगा

बीमार थे..नहीं दिया बीमा क्लेम, अब कंपनी चुकाएगी होम लोन

भोपाल। दोपहर मेट्रो

होम लोन के साथ करवाया गया बीमा, गंभीर बीमारी के समय काम नहीं आया तो उपभोक्ता ने बीमा कंपनी को उपभोक्ता आयोग में चुनौती दी। मामले में आयोग ने बीमा कंपनी को बकाया 16 लाख रुपए का होम लोन, उस पर ब्याज और मानसिक पीड़ा एवं वाद व्यय के लिए 15 हजार रुपए देने के आदेश दिए हैं। जिला उपभोक्ता आयोग ने यह आदेश मामले में पेश किए गए दस्तावेज और साक्ष्यों के आधार पर दिया।

भोपाल के राजीव नगर निवासी उपभोक्ता महेन्द्र कुमार ने साल 2018 को आईसीआईसीआई लोम्बार्ड और पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस लिमिटेड के खिलाफ उपभोक्ता आयोग में परिवाद



दायर किया था। उन्होंने बताया कि कटारा हिल्स में 2 बीएचके फ्लैट खरीदने के लिए उन्होंने पीएनबी हाउसिंग फाइनेंस से 18.80 लाख रुपए का होम लोन लिया था। लोन के साथ उन्होंने आईसीआईसीआई लोम्बार्ड से 34,472 रुपए में स्वास्थ्य और मकान क्षतिपूर्ति बीमा पॉलिसी ली थी। उनका कहना था कि पॉलिसी लेते समय बताया गया था कि बीमारी या दुर्घटना की स्थिति में बकाया लोन राशि का भुगतान बीमा कंपनी

कंपनी ने सामान्य बता क्लेम किया था खारिज

मामला भोपाल के उपभोक्ता से जुड़ा है। वे 2017 में चक्कर खाकर गिर पड़े तो न्यूरोसिस्टिकसरकोसिस बीमारी का पता चला, लेकिन कंपनी ने सामान्य मानकर उनका क्लेम खारिज कर दिया।

करेगी। स्वास्थ्य बीमा 2019 और मकान की पॉलिसी 2033 तक वैध थी। उपभोक्ता ने अपने आवेदन में बताया कि साल 2017 में चक्कर आने से गिरने के बाद बीमारी का पता चला। जांच में न्यूरोसिस्टिकसरकोसिस की पुष्टि हुई। इलाज के डॉक्यूमेंट और मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर उन्होंने बीमा कंपनी से क्लेम किया, लेकिन कंपनी ने इसे सामान्य बीमारी बताते हुए खारिज कर दिया। इसके बाद उन्होंने उपभोक्ता आयोग की शरण ली।

आरटीआई से मिली जानकारी से खुलासा

बीयू का अपना सभागार, फिर भी हॉल किराए पर 12 लाख खर्च चाय का बिल भी 1.25 लाख

भोपाल। दोपहर मेट्रो

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय (बीयू) में एक घंटे के कार्यक्रम पर करीब 12 लाख रुपए खर्च किए जाने का मामला सामने आया है। दरअसल, बीयू के पास खुद का सभागार होने के बावजूद 11 दिसंबर 2023 को 'विकसित भारत-2047' विषय पर आयोजित सिम्पोजियम के लिए विश्वविद्यालय ने मिंटो हॉल किराए पर लिया। इसे लेकर आरटीआई एक्विटिविस्ट धर्मेन्द्र गौर ने रजिस्ट्रार प्रो. समर बहादुर सिंह से शिकायत की है। इस कार्यक्रम के समय पदस्थ तत्कालीन कुलगुरु प्रो. सुरेश जैन से चर्चा करने का प्रयास किया गया, पर उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया। वहीं, रजिस्ट्रार डॉ. आइके मंसूरी ने इस संबंध कुछ भी कहने से इनकार कर दिया। गौर ने सवाल किया कि ऐसी क्या जरूरत पड़ गई कि एक घंटे के कार्यक्रम के लिए 12 लाख रुपए खर्च किए गए। कार्यक्रम में मिंटो हॉल के किराए पर करीब 2.95 लाख, भोजन पर 7 लाख और चाय पर 1.25 लाख रुपए खर्च किए। कुल खर्च 12 लाख हुआ।



इस मद में इतना खर्च

मद :	विवरण/खर्च
मिंटो हॉल किराया	2.95 लाख
भोजन	7 लाख
हाई-टी लंच	1.25 लाख
हाई-टी हाई-टी दर	500 रुपए/व्यक्ति
लंच दर	500 रुपए/व्यक्ति
+ जीएसटी	250 रुपए/व्यक्ति

आरटीआई एक्विटिविस्ट धर्मेन्द्र गौर का कहना है कि सार्वजनिक संस्थानों में उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करते हुए अनावश्यक खर्च से बचना चाहिए। इस आयोजन से जुड़े प्रस्ताव, स्वीकृति, बिल, भुगतान संबंधी दस्तावेज सामने आने चाहिए। वहीं ' रजिस्ट्रार प्रो. समर बहादुर सिंह का कहना है कि यह मामला मेरे कार्यकाल का नहीं है। आयोजन और खर्च की शिकायत मिली है, जांच करवाई जाएगी।

अयोध्या बायपास पर अंधेरा..बिजली के खंभे गायब, जहां हैं वहां लाइट बंद



भोपाल। अयोध्या बायपास पर रात के समय प्रकाश व्यवस्था बंदहाल होने से वाहन चालकों और राहगीरों की परेशानी बढ़ गई है। मार्ग के कई हिस्सों में स्ट्रीट लाइट के खंभे या तो गायब हैं या लंबे समय से लाइट बंद पड़ी है। शाम होते ही सड़क के कुछ हिस्सों में अंधेरा छा जाता है, जिससे दुर्घटना की आशंका बनी हुई है। बायपास पर दिनभर वाहन दौड़ते हैं। रात में भी यातायात का दबाव बना रहता है। ऐसे में पर्याप्त रोशनी नहीं होने से हादसों की आशंका है।



न ओटीपी शेयर किया, न किसी से बात, फिर भी ठगी

साइबर ठगी...मोबाइल अपडेट होते ही बैंक खाते से पार हो गए रुपए

भोपाल। जहांगीराबाद थाना क्षेत्र में मोबाइल अपडेट होने के बाद सब्जी विक्रेता के बैंक खाते से 26 हजार 500 रुपए ट्रांसफर होने का मामला सामने आया है। पुलिस के अनुसार अफजल कॉलोनी, जिंसी निवासी 37 वर्षीय अब्दुल रहीम सब्जी व्यवसायी हैं। 24 सितंबर की सुबह मोबाइल में आवाज नहीं आ रही थी। दोपहर दो बजे मोबाइल की स्क्रीन पर अपडेट का विकल्प

आया और कुछ देर बाद मोबाइल अपने आप अपडेट हो गया। अपडेट के बाद मोबाइल चालू होने पर उसने दोपहर 3.15 बजे फोन-पे की हिस्ट्री चेक की तो खाते से 26,500 रुपए गायब मिले। उसने अगले दिन एसबीआई की जहांगीराबाद शाखा में बैंक को पूरा मामला बताया। साइबर क्राइम थाना और हेल्पलाइन में भी शिकायत की। साइबर थाना मामले की जांच कर रहा है।



युवा, मध्यप्रदेश के सामर्थ्य का जीवन्त प्रतीक हैं। राज्य सरकार ने वर्ष 2025 को, निवेश और रोजगार वर्ष के रूप में मनाया था, वर्ष 2026 किसान कल्याण वर्ष है और अब इसे आगे बढ़ाते हुए वर्ष 2027 को युवा वर्ष के रूप में, मनाने का निर्णय लिया है। युवाओं के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास और कल्याण के लिए, मोहन सरकार ने इन्द्रधनुषी रणनीति का निर्माण किया है, जिसके 07 महत्वपूर्ण स्तंभ हैं-

रणनीति के 7 महत्वपूर्ण स्तंभ

- गुणवत्तायुक्त शिक्षा
- कौशल विकास
- उद्यमिता एवं स्वरोजगार
- सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर
- स्टार्टअप्स को सहयोग
- खेल, कला, संस्कृति, शोध एवं अनुसंधान प्रोत्साहन
- नेतृत्व क्षमता विकास

उद्योग और सरकार के बीच, एक कड़ी का काम करेगा।

उद्यम पोर्टल पर विगत ढाई वर्षों में, 3 लाख 34 हजार से अधिक विनिर्माण ईकाईयां पंजीकृत हुई, जिनमें 33 लाख 80 हजार युवाओं को, प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं। वृहद औद्योगिक ईकाईयों में भी, 50 हजार से अधिक युवाओं को रोजगार प्रदान किया गया है।

राज्य सरकार अगले ढाई वर्ष में, उन युवाओं पर विशेष रूप से फोकस करने जा रही है, जो किसी कारण से 10वीं की परीक्षा में

उत्तीर्ण नहीं हो पाए अथवा जिन्होंने 10वीं के बाद पढ़ाई छोड़ दी है। ऐसे युवाओं के हाथ में हुनर देकर, उन्हें इतना सशक्त बनाया जाएगा कि वे प्रदेश ही नहीं बल्कि देश और विदेश जाकर भी रोजगार प्राप्त कर सकें।

युवाओं को केन्द्र में रखकर, MSME और स्टार्टअप इकोसिस्टम को नई गति देने के लिए प्रदेश में मध्यप्रदेश M S M E विकास नीति 2025', 'स्टार्टअप नीति एवं कार्यान्वयन योजना 2025' नीति लागू की गई। वर्तमान में लगभग 8 हजार स्टार्टअप संचालित हैं, इसमें से 50 प्रतिशत स्टार्टअप का नेतृत्व, नारी शक्ति, कर रही है। प्रदेश के हर जिले में, कम से कम एक इंक्यूबेशन सेंटर बनाया जायेगा। आगामी ढाई वर्षों में स्टार्ट-अप की संख्या 12 हजार से अधिक

और 100 नवीन इंक्यूबेशन

सेंटर की स्थापना करने का लक्ष्य है। 'प्लग-एंड-प्ले' मॉडल पर, को-वर्किंग स्पेस तैयार किए जाएंगे। युवा पीढ़ी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, ड्रोन, सेमीकंडक्टर, एआई, स्पेसटेक और ग्रीन मैनुफैक्चरिंग जैसे उभरते क्षेत्रों में, एमएसएमई की भागीदारी को अनिवार्य रूप से बढ़ाया जाएगा। प्रतियोगी परीक्षाओं से संबंधित न्यायालयीन मामलों की, त्वरित सुनवाई और निराकरण के लिए, राज्य सरकार ने 04 'फास्ट ट्रैक कोर्ट स्थापित करने का भी निर्णय लिया है।



इम्पैक्ट फीचर

19 जनजातीय बहुल जिलों में 94 सांदीपनि विद्यालय



सांदीपनि विद्यालय

कुल भवन	274	निर्माणाधीन भवन	167
पूर्ण हो चुके भवन	97	लोकार्पित विद्यालय	74
लोकार्पण के लिए तैयार 23			

सांदीपनि विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु नवीन शिक्षा नीति के दृष्टिगत सर्व संसाधन संपन्न विद्यालयों की स्थापना के लिए योजनान्तर्गत प्रथम चरण में 19 जिलों में 94 सांदीपनि विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है। इन विद्यालयों के 55 भवनों का निर्माण पूर्ण हो गया है एवं 39 भवन निर्माणाधीन है।

निर्माण :- आश्रम शाला/जूनियर छात्रावास/सीनियर छात्रावास/महाविद्यालयीन छात्रावास, माता शबरी आवासीय कन्या शिक्षा परिसर, क्रीडा परिसर एवं सांदीपनि विद्यालयों के भवन निर्माण कार्य के लिए वित्तीय वर्ष 2026-27 में पूंजीगत मद में राशि रु. 1 हजार 7 सौ 37 करोड़ का

बजट प्रावधान किया गया है।

जनजातीय उपयोगिता :- अनुसूचित जनजातियों के सर्वांगीण विकास हेतु विभिन्न विभागों के माध्यम से आर्थिक, मानव संसाधन, क्षेत्र विकास एवं अन्य विकास कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। संबंधित विकास विभागों द्वारा जनजातीय उपयोगिता अंतर्गत प्रावधानित बजट एवं व्यय की राशि का अनुश्रवण जनजातीय कार्य विभाग के स्तर पर किया जाता है।

वित्तीय वर्ष 2025-26 में जनजातीय उपयोगिता अंतर्गत राशि रु. 37350 करोड़ का व्यय किया गया। वर्ष 2026-27 में 47428 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

18.95 लाख जनजातीय विद्यार्थियों को 189 करोड़ छात्रवृत्ति 3.18 लाख जनजातीय विद्यार्थियों को 556 करोड़ की पोस्ट मेट्रिक छात्रवृत्ति



51 विद्यार्थियों को विदेशों में अध्ययन के मौके

विदेश अध्ययन छात्रवृत्ति योजना अंतर्गत विदेश में अध्ययन के लिए प्रति विद्यार्थी, प्रतिवर्ष 40 हजार यू.एस. डॉलर कोचिंग शुल्क एवं 10 हजार यू.एस. डॉलर जीवन निर्वाह भत्ता एवं अन्य आकस्मिक भत्ते हेतु राशि प्रदान की जाती है।

विगत 09 वर्षों में 51 विद्यार्थियों को विदेश अध्ययन स्थित विश्वविद्यालयों में उच्च अध्ययन प्राप्त किया जा रहा है।

छात्रावास जनजातीय कार्य विभाग द्वारा कुल 2671 छात्रावास एवं आश्रम शालाओं का संचालन किया जा रहा है जिसके लिए वित्तीय

वर्ष 2026-27 हेतु राशि रुपये 7 सौ 27 करोड़ का बजट प्रावधान किया गया है। परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र योजना अंतर्गत वर्ष 2025-26 में केन्द्र सरकार द्वारा प्रत्येक संभागीय मुख्यालय पर 10 परीक्षा पूर्व प्रशिक्षण केन्द्र हेतु भवन स्वीकृत किये गये हैं।

प्रतिभा योजना अंतर्गत अनुसूचित जनजाति वर्ग के कक्षा 12वीं उत्तीर्ण विद्यार्थियों को राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से प्रतिष्ठित संस्थाओं IIT, NIT, NLIU, शासकीय मेडिकल कॉलेज में चयन होने पर पुरस्कार राशि प्रदाय की

प्री मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना कक्षा 01 से 10 में वर्ष 2003 से अभी तक लगभग 3,96,24,580 (तीन करोड़ छियानवे लाख चौबीस हजार पांच सौ अस्सी) एवं पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति अंतर्गत वर्ष 2003 से वर्ष 2025-

26 तक लगभग 58,02,143 (अठ्ठावन लाख दो हजार एक सौ तिरालीस) इस प्रकार लगभग 4,54,26,723 (चार करोड़ चौवन लाख छब्बीस हजार सात सौ तेईस) विद्यार्थियों लाभान्वित किया गया है।



जाती है। इस योजना में वर्ष 2025-26 में 272 विद्यार्थियों को राशि रुपये 71 लाख वितरित की गई। मध्यप्रदेश स्पेशल एण्ड रेसीडेंशियल एकेडमिक सोसायटी के द्वारा 71 एकलव्य आदर्श आवासीय, 82 माता शबरी

आवासीय कन्या शिक्षा परिसर एवं 08 आदर्श आवासीय विद्यालयों का संचालन किया जा रहा है। इन विद्यालयों में 61 हजार से अधिक विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दी जा रही है।

शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए उच्च गुणवत्ता के छात्रावास

शिक्षा को बढ़ावा देने म.प्र. सरकार ज्ञानोदय आवासीय विद्यालय, छात्रावास एवं उत्कृष्ट 8 छात्रावास के रूप में 1933 छात्रावासों का संचालन कर रही है। इनमें एक लाख से अधिक सीट स्वीकृत है। अनुसूचित

जाति छात्रावास भवनों का निर्माण, आवास सहायता योजना, छात्रावासों के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार योजना, छात्रावासों में पुस्तकालय योजना, प्रसाधन किट प्रदाय योजना, दिल्ली में उच्च शिक्षा हेतु छात्रावास

सुविधा को गुणवत्ता सहित लागू कर अनुसूचित जाति के युवाओं की शिक्षा के स्तर का उन्नयन किया जा रहा है। इस वर्ष राशि रु. 420.00 करोड़ के 84 छात्रावास के नवीन भवनों का निर्माण कराया जा रहा

है। कक्षा 1 से लेकर महाविद्यालयीन स्तर तक की शिक्षा को सुगम बनाये जाने हेतु विभिन्न छात्रवृत्ति योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। वर्ष 2025-26 में कक्षा 1 से 12 तक के लिये 13 लाख 37 हजार विद्यार्थियों को राशि रु.

73.71 करोड़ की छात्रवृत्ति स्वीकृत की गई है। महाविद्यालय स्तर के लिये 2 लाख 09 हजार विद्यार्थियों को राशि रु. 344.02 करोड़ की पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति स्वीकृत की गई है।

पिछड़ा वर्ग के 5 करोड़ से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित 13 हजार करोड़ से अधिक की राशि स्वीकृत



मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के दूरदर्शी नेतृत्व और निर्णयों के फलस्वरूप प्रदेश में पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों को शिक्षा के हर स्तर पर अभूतपूर्व प्रोत्साहन और वित्तीय

सहयोग मिल रहा है। पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों को राज्य सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा से विदेश अध्ययन के लिये छात्रवृत्ति, निःशुल्क कोचिंग और प्रशिक्षण जैसी महत्वपूर्ण

योजनाओं में पिछले 15 वर्षों में 13 हजार 156 करोड़ 51 लाख से अधिक की वित्तीय सहायता दी गई है। योजनाओं से लगभग 5 करोड़ 34 लाख 39 हजार 54 से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

प्री एवं पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति से मदद

स्कूली स्तर पर ड्रॉप-आउट दर को समाप्त करने और बच्चों की पढ़ाई निरंतर बनाए रखने के लिए संचालित प्री-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत वर्ष 2012-13 से 2026-27 तक पिछड़ा वर्ग के 4 करोड़ 50 लाख से अधिक

विद्यार्थियों को ₹ 2,535 करोड़ से अधिक की छात्रवृत्ति वितरित की जा चुकी है। इसके साथ ही स्कूली शिक्षा में उत्कृष्ट अंक लाने वाले होनहारों को 'प्रावीण्य (मेधावी) छात्रवृत्ति योजना' के तहत पिछड़ा वर्ग के 2,185 विद्यार्थियों को 1 करोड़ 69 लाख रुपये की राशि दी गई है। उच्च एवं व्यावसायिक शिक्षा में कॉलेज स्तर के छात्रों को राहत देते हुए 'पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना' के तहत वर्ष 2012-13 से 2026-27 के दौरान इसी वर्ग के 84.22 लाख विद्यार्थियों को ₹ 10,467 करोड़ की राशि से संबल प्रदान किया गया है।

अनुसूचित जाति के बच्चों को शिक्षा के बेहतर अवसर 84 छात्रवासों के लिए 420 करोड़



चु नाव में हार-जीत पर सवाल उठना लोकतंत्र का सामान्य हिस्सा है, लेकिन जब सवाल चुनाव कराने वाली संस्था की निष्पक्षता और निर्णय प्रक्रिया पर उठने लगे, तो मामला किसी एक दल या किसी एक चुनाव तक सीमित नहीं रहता। तब कटघरे में केवल आयोग नहीं, मतदाता का भरोसा भी खड़ा होता है। मुख्य निर्वाचन आयुक्त और अन्य निर्वाचन आयुक्तों के बीच कथित मतभेदों तथा विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर को लेकर सामने आई खबरों ने इसी भरोसे को बहस के केंद्र में ला दिया है। सबसे बड़ा सवाल यह नहीं कि किसी संवैधानिक संस्था के भीतर

मतभेद क्यों हुए। असहमति किसी भी संस्थान की स्वस्थ निर्णय प्रक्रिया का हिस्सा हो सकती है। असली सवाल यह है कि क्या उन असहमतियों पर पर्याप्त विचार हुआ? क्या महत्वपूर्ण फैसले सामूहिक प्रक्रिया से लिए गए? और क्या आयोग अपने निर्णयों के पीछे जनता को स्पष्ट और संतोषजनक जानकारी देने के लिए तैयार है? इन सवालों पर अस्पष्टता संदेह को जन्म देती है। एसआईआर को लेकर मतदाता सूची के व्यापक पुनरीक्षण ने इस बहस को और संवेदनशील बना दिया है। मतदाता सूची को

भरोसे की कसौटी

अद्यतन करना निर्वाचन प्रक्रिया की अनिवार्य जरूरत है। मृत, स्थानांतरित या अनिवार्य जरूरत है। मृत, स्थानांतरित या यह सुनिश्चित करना उतना ही महत्वपूर्ण है कि किसी वास्तविक मतदाता का नाम प्रक्रिया की खामी के कारण न कटे। और यदि ऐसा हो जाए तो उसे अपना नाम दोबारा जुड़वाने का रास्ता सरल, स्पष्ट और समयबद्ध मिले। यही वह बिंदु है जहां चुनाव आयोग की संस्थागत विश्वसनीयता की असली परीक्षा होती है। आरोप सत्ता पक्ष लगाए या विपक्ष, उनका जवाब राजनीतिक बयानबाजी

से नहीं, बल्कि आंकड़ों, दस्तावेजों और पारदर्शी प्रक्रिया से दिया जाना चाहिए। आयोग जितना अधिक अपने फैसलों की प्रक्रिया सार्वजनिक करेगा, उतनी ही कम गुंजाइश संदेह और अटकलों के लिए बचेगी। इस विवाद का राजनीतिक पहलू भी स्वाभाविक है। विपक्ष इसे मुद्दा बनाएगा और सत्ता पक्ष आयोग का बचाव करेगा। लेकिन यदि पूरी बहस केवल राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप में बदल गई तो मूल प्रश्न पीछे छूट जाएगा। जनता को जानना है कि मतदाता सूची कैसे तैयार हो रही है, नाम हटाने के मानदंड क्या हैं और शिकायतों का समाधान कितनी जल्दी होगा।

सनातन संस्कृति में साक्षात का सत्कार और श्राद्धपक्ष की श्रद्धा का मर्म...!

भूपेन्द्र शर्मा

वरिष्ठ पत्रकार



सनातन संस्कृति में पितृ-पक्ष पूर्वजों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने, उनके प्रति अपनी अगाध श्रद्धा प्रकट करने एवं उनका स्मरण करने का पवित्र एवं पार्विक काल है। भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन अमावस्या तक चलने वाले इस सोलह दिवसीय कालखंड में देश ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में फैले सनातनी हिंदू पूर्वजों की आत्मशांति के लिए तर्पण, पिंडदान एवं ब्राह्म-भोज जैसे अनुष्ठान करते हैं। यद्यपि आधुनिकता की तीव्र रेस में भारतीय जीवन मूल्य तथा सामाजिक सरोकार बदलते जा रहे हैं। विडंबना है कि समाज का बड़ा वर्ग दिवंगत पूर्वजों की आत्मशांति के लिए विधि-विधान से अनुष्ठानों का प्रदर्शन तो करता है, परंतु उन्हीं जन्मदाताओं के साक्षात रहते जिस प्रकार से उनकी उपेक्षाएं एवं उनके साथ अवांछनीय व्यवहार होता है, वह बड़ा कष्टकर होता है। प्रश्न यह उठता है कि क्या केवल मृत्योपरांत कर्मकांड कर देने मात्र से पितृ-ऋण से उच्छ्रण हुआ जा सकता है? क्या श्राद्ध का वास्तविक उद्देश्य केवल कर्मकांडीय औपचारिकताएं हैं? या हमारे मनों में कोई विशेष मानवीय, धार्मिक भाव होते हैं? वेद, पुराण अथवा विभिन्न धार्मिक ग्रंथों के अनुसार पितृों के प्रति सच्ची श्रद्धा जीवनकाल में तन-मन-धन से उनकी सेवा और सम्मान से ही आरंभ होती है। सनातन संस्कृति में कर्म-सिद्धांत को शाश्वत माना गया है। भग्निय पुराण में कहा गया है कि जीव को उसके अच्छे और बुरे कर्मों का फल इहलोक या परलोक में अवश्य भोग्यमान पड़ता है-

**यथा प्रयुक्तं कर्म श्रुतं तस्य तत्फलमश्नुते।
शुभस्य वा शुभस्यैव नाशुभस्य शुभं फलम्॥**

जैसा कर्म किया जाता है, मनुष्य वैसा ही फल भोगता है। शुभ कर्म का शुभ फल और अशुभ कर्म का अशुभ फल ही मिलता है। अशुभ कर्म करने पर शुभ फल की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती। गरुड़ पुराण के अनुसार, मनुष्य के अच्छे एवं बुरे कर्म संकेत साथ छाया की तरह चलते हैं तथा समय आने पर यथानुकूल परिणाम देते हैं-

**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।
नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि॥**

किए गए शुभ-अशुभ कर्मों का फल मनुष्य को अवश्य ही मिलता है। बिना भोगे करोड़ों कल्पों में भी कर्म नष्ट नहीं होते। गरुड़ पुराण के प्रेत कल्प एवं आचार कांड में कर्मों के फल का सूक्ष्म एवं जीवंत वर्णन मिलता है। इसमें भगवान विष्णु गरुड़जी को बताते हैं कि कोई भी पापी अपने कुकृत्यों के दंड से कभी मुक्त नहीं हो सकता। यजुर्वेद में माता-पिता के प्रति संतान के कर्तव्यों का वर्णन मिलता है-

यदापिषेप मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन्।

एतत्तदनेन अनृणां भवाम्यहतौ पितरौ यया॥

जब माता-पिता वृद्धावस्था में अशक्त एवं असमर्थ होते हैं, तब पुत्र-पौत्रादि तन-मन-धन से उन्हें संतुष्ट रखते हैं, तो वे स्वयं को जन्मदाताओं के ऋण से मुक्त कर लेता है। माता-पिता अपने जीवन का अनमोल समय, सुख-चैन त्याग, जिस प्रकार संतान को पाल-पोसकर बड़ा बनाते हैं, उनके इस उपकार से उच्छ्रण होना आसान नहीं है। ऐसे में, यदि उनके जीवनकाल में ही उन्हें उपेक्षित कर दिया जाए, उन्हें सम्मान न दिया जाए, उनकी देखभाल न की जाए, तो मृत्यु के बाद किए जाने वाले बड़े-बड़े श्राद्ध एवं अनुष्ठान मात्र दिखावा हैं। आज श्राद्ध कर्म अधिकांश परंपरा, स्वयं के यश एवं मानसिक शांति के लिए किए जाते हैं, क्योंकि मान्यता है कि पितृ-पक्ष में विशेष पूजा-पाठ या ब्राह्मण भोज करने से सारे पाप धुल जाएंगे तथा पूर्वज प्रसन्न हो जाएंगे।

यह विचारणीय प्रश्न है कि जिन माता-पिता ने जीवनभर धूप में तपकर हमें छाया दी, उनके जीवित रहते उन्हें घर के एक कोने में अकेला क्यों छोड़ दिया जाता है? जिन वृद्धों के पास बैठने के लिए हमारे पास दो मिनट का समय नहीं होता,



मृत्यु पश्चात उनके चित्र पर माला चढ़ाने का क्या औचित्य है? यदि पितरों की आत्मशांति के लिए श्राद्ध करना अनिवार्य है, तो उनके जीवित रहते उनके जीवन में अशांति एवं मानसिक यातनाएं क्यों उत्पन्न की जाती हैं? श्राद्ध शब्द 'श्रद्धा' से बना है। श्रद्धा का अर्थ है- आदर, विश्वास एवं समर्पण। यह समर्पण तब तक जीवित रहना चाहिए, जब तक वे सांस ले रहे हैं। मृत्योपरांत तर्पण करना तभी सार्थक है, जब जीवित रहते उनके चरणों में सच्ची सेवा का अर्पण किया गया हो। विष्णु पुराण में महान सम्राट ययाति की एक प्रसिद्ध कथा आती है- एक बार दैत्यगुरु शुक्राचार्य ने किसी बात से क्रोधित होकर ययाति को समय से पहले ही वृद्ध होने का श्राप दे दिया। राजा ययाति ने अपने उस बुढ़ापे से मुक्ति पाने के लिए अपने पांचों पुत्रों से आग्रह किया कि वे अपनी युवावस्था उन्हें दे दें और बदले में उनका बुढ़ापे का जीवन ले लें। चार बड़े पुत्रों ने अपने पिता की मांग अस्वीकृत कर दी, क्योंकि वे अपने भोग-विलास और युवावस्था के सुखों को छोड़ना नहीं चाहते थे, किंतु सबसे छोटे पुत्र पुरु ने निस्संकोच, सहर्ष अपना यौवन पिता को सौंप दिया तथा पिता का वृद्ध शरीर स्वीकार कर लिया। जब यमराज ने पुरु से उसकी इस महान त्याग और पितृ-भक्ति का कारण पूछा, तो पुरु का उत्तर प्रेरक था। पुरु ने कहा- 'मैंने अपने पिता को इस विश्वास और जीर्ण-शीर्ण दशा को देखा है। आज जो स्थिति मेरे पिता की है, कल वृद्धावस्था आने पर यह दशा मेरी भी हो सकती है। अपने पिता को इस कष्ट से मुक्त करना मेरा नैतिक कर्तव्य है।' कथा का सार है कि माता-पिता के कष्टों को अपना कष्ट समझना और उनकी वृद्धावस्था की लाचारी को दूर करना ही सच्ची पितृ-भक्ति है। पुरु का यह त्याग मात्र एक

पौराणिक कथा नहीं, बल्कि हर संतान के लिए मान्यता की सीख है। माता-पिता या दादा-दादी के मन में अपनी संतान के प्रति कभी भी कोई दूषित या द्वेषपूर्ण विचार पैदा नहीं हो सकता। वे हमेशा यही चाहते हैं कि उनके बच्चे जीवन में ऐसी प्राप्ति करें, जो वे स्वयं नहीं कर पाए। ऐसी स्थिति में, यदि वे बच्चे अपने जीवन के उत्तरार्ध में माता-पिता को बोझ समझने लगे, उन्हें अपमानित करें, तो यह विडंबना है। वृद्धजन परिवार, समाज के लिए हमारे अतीत की अमूल्य थाती एवं सांस्कृतिक धरोहर हैं। यदि उन्हें घर के भीतर एवं बाहर उचित मान-सम्मान मिले, उनके अनुभवों का लाभ नई पीढ़ी को मिले, तो वे न केवल परिवार को जोड़कर रखते हैं, बल्कि प्राप्ति और विकास के मार्ग को भी सुगम बनाते हैं। पितृ-पक्ष केवल औपचारिक कर्मकांड नहीं, बल्कि आत्म-मंथन काल है। संतानों को यह संकल्प लेना चाहिए कि- 'हम अपने माता-पिता एवं वृद्धजनों को जीवित रहते हुए कभी अकेला या असहाय महसूस नहीं होने देंगे।' 'उनकी छोटी-छोटी इच्छाओं, उनकी मानसिक स्थिति और उनके स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रखेंगे।' 'उनके प्रति श्रद्धा एवं प्रेम का भाव केवल एक पखवाड़े तक सीमित न रहकर सदैव आचरण में झलकेगा।'

महात्मा विदुर ने जीवन के दो सत्य बताए हैं-

पूर्वं ब्रथसि तत् कुर्याद येन वृद्धः सुखं वसेत्।

यावज्जीवनं तत् कुर्याद येन प्रेत्य सुखं वसेत्॥

यानी- मनुष्य को अपनी युवावस्था में ऐसे सत्कर्म करना चाहिए, जिससे वृद्धावस्था सुखपूर्वक बीते तथा जीवनभर ऐसे कार्य करने चाहिए, जिससे इहलोक-परलोक दोनों में सुखमय रहें। श्लोक का तात्पर्य है कि हम युवावस्था में माता-पिता तथा वृद्धजनों को कितना सुख दे रहे हैं, उसी के अनुसार हमारे भावी लोक-परलोक जीवन का मार्ग सुनिश्चित होता है। यदि हम अपने माता-पिता की वृद्धावस्था को सुखद रखेंगे, तो हमारी संतानें भी हमारे साथ वैसा ही आचरण करेंगी। जब माता-पिता जीते-जी अपनी संतान की सेवा से तृप्त और संतुष्ट हो जाएंगे, तब उनके हृदय से निकलने वाला अगाध आशीर्ष संतान के जीवन को पुण्य फल देगा तथा जब वे इस नश्वर संसार को त्यागेंगे, तब उनके प्रति की गई श्रद्धा-अर्पण, तर्पण क्रिया उनकी आत्मा को वास्तविक शांति एवं तृप्ति प्रदान करेगी। यही श्राद्ध का सच्चा धार्मिक एवं मर्म है।

-यह लेखक के अपने विचार हैं।

हेल्थ अपडेट

पल्मोनोलॉजिस्ट के संपर्क में आने वाले लोग अक्सर एक सवाल पूछते हैं कि क्या उनके फेफड़े हमेशा के लिए डैमेज हो चुके हैं या फिर इन्हें फिर से सही किया जा सकता है। बेशक इस सवाल का जवाब उन्हें खुश कर सकता है, लेकिन कुछ बारीकियां भी ध्यान रखनी होती हैं। फेफड़ों की खुद को रिपेयर और सही करने की अद्भुत शक्ति होती है, लेकिन इसके लिए एक्सपोजर को रोकना होता है। हालांकि, लंग्स की रिकवरी इस बात पर निर्भर करती है कि कोई कितने समय तक स्मोकिंग या पॉल्यूशन के संपर्क में रहा है और इसकी गंभीरता कितनी है।



रेस्पिरैटरी और कार्डियोवैस्कुलर डिजीज होती है। अच्छी बात यह है कि किसी भी उम्र में इन चीजों के संपर्क को रोकने से आपको फायदा होता है। ध्यान रखें कि धूम्रपान बंद करने का मतलब यह नहीं है कि पहले से हो चुकी हर तरह की लंग डैमेज पूरी तरह से

हर सिगरेट, सेकंड हैंड स्मोक या प्रदूषित हवा के संपर्क में आने से रेस्पिरैटरी सिस्टम में खरबनाक और क्षति पहुंचाने वाले पार्टिकल्स पहुंच जाते हैं। स्मोकिंग सीओपीडी का प्रमुख कारण है और धीरे-धीरे फेफड़ों की क्षमता को खत्म कर देती है। लंबे समय तक पॉल्यूशन के महीन दूषित पदार्थों के संपर्क में रहने से भी रेस्पिरैटरी और कार्डियोवैस्कुलर डिजीज होती है। अच्छी बात यह है कि किसी भी उम्र में इन चीजों के संपर्क को रोकने से आपको फायदा होता है। ध्यान रखें कि धूम्रपान बंद करने का मतलब यह नहीं है कि पहले से हो चुकी हर तरह की लंग डैमेज पूरी तरह से

खत्म हो जाएगी। उदाहरण के लिए एम्फाइसीमा जैसी समस्या, जिसमें फेफड़ों के एयर सैक खराब हो जाते हैं और कभी ठीक ना होने वाली स्ट्रक्चरल डैमेज हो जाती है।

कोई चाय, सप्लीमेंट, तेल या क्विक डिटॉक्स ट्रीटमेंट जादुई तरीके से सालों से हो रही स्मोकिंग या पॉल्यूशन को खत्म नहीं करता है। बलगम और बाहरी तत्वों को साफ करने के लिए फेफड़ों की प्राकृतिक क्षमता होती है। सबसे प्रभावी तरीका संपर्क के स्रोत को हटाना है, फिजिकल एक्टिविटी करना है, बैलेंसड डाइट लेना और पहले से मौजूद रेस्पिरैटरी डिजीज को मैनेज करना है। अमेरिकन लंग एसोसिएशन खासतौर से क्विक लंग डिटॉक्स करने वाले प्रोडक्ट से बचने की सलाह देता है।

पल्मोनोलॉजिस्ट कब दिखाएँ? सालों तक स्मोकिंग करने या पॉल्यूशन के संपर्क में रहने का मतलब यह नहीं है कि आपको कोई गंभीर लंग डिजीज होगी ही। हालांकि, लगातार हो रही खांसी, बेवजह सांस फूलना, सांस के साथ आवाज आना, बार-बार चेस्ट इन्फेक्शन होना, खांसी में खून आना, सीने में दिककत होना या एक्सरसाइज करने की क्षमता का कम होना जैसे संकेतों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। ध्यान रखें कि हर बार फेफड़े पुरानी कंडीशन में पूरी तरह नहीं लौट सकते हैं, खासतौर से तब, जब स्ट्रक्चरल डैमेज हो चुकी हो। लेकिन स्मोकिंग छोड़ना, पॉल्यूशन का एक्सपोजर कम करना और लंग्स को बचाने का फैसला लेना कभी भी बेकार नहीं जाता।

निशाना

मीठे हसीन ख्वाब नहीं फिर सजाइए



प्रदीप कश्यप

बेबस दुखी गरीब का दिल मत दुखाइए। दुख दूर करके उस के जरा सुख दिलाइए। कड़वी ये जिंदगी की हकीकत बहुत रही। मीठे हसीन ख्वाब नहीं फिर सजाइए। गुमराह हो के दूर जो मंजिल से हो गया। हिम्मत बँधा के उसकी भी रस्ता बताइए। सूरज छिपा तो रात हुई खूब ही घनी। दीपक जला के फिर से अंधेरा हटाइए। दीवार गिरा भेद की दुर्भाष दूर कर। नफरत को खत्म मानके मुहब्बत बढ़ाइए। दुख दर्द बाँटते रहे चुभकर सभी को जो। कटि वे दूर कर के सुखद गुल खिलाइए। कश्यप सभी के बीच में खुशियाँ बिखेर कर। आँखों में आँसुओं का समंदर छिगाइए।

मान्यता

यहां चींटियों को देख मौसम का अनुमान लगा लेते लोग, हमेशा सटीक निकलती है भविष्यवाणी

आज टेक्नोलॉजी के युग में टूफ लाइन और अलग-अलग जगह पर उठने वाले चक्रवातों को देखकर मौसम विभाग अनुमान लगाकर चंद सेकंड में मोबाइलों पर भेज देता है लेकिन आप सोचिए कि जब मौसम विभाग इतना ताकतवर नहीं था, लोगों के पास सूचनाओं हासिल करने के साधन नहीं थे, तब वे कैसे मौसम का अनुमान लगाते होंगे और कैसे अपनी खेतीबाड़ी से जुड़े काम या रोजमर्रा के काम करते होंगे।



बुदेलखंड में सदियों से मौसम परिवर्तन या मौसम में होने वाली गतिविधियों के लिए प्रकृति में होने वाली चीजों का एनालिसिस किया जाता था। बुजुर्गों द्वारा पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे अनुमान आज भी सटीक बैठते हैं। ऐसे ही अब अगर चींटियों के अंड छोड़ने को लेकर देखा जाए, तो इससे माना जाता है कि बारिश का द एंड हो गया है या यूँ कहें कि मानसून की विदाई लगभग हो जाती है। चींटियों को लेकर बुदेलखंड में ऐसा माना जाता है कि उन्हें बारिश का आभास बहुत पहले ही हो जाता है। चाहें बारिश होना हो या फिर

बारिश नहीं होना हो, उनकी गतिविधियों से लोग मौसम का पूर्वानुमान लगा लेते हैं। **अंडे बाहर निकालती हैं चींटियां:** बुदेलखंड में चींटियों को लेकर जो बातें कही जाती हैं, उनके अनुसार जब बारिश होती है, तो उससे पहले ही चींटियां जमीन के अंदर बिल बनाकर जो सैकड़ों-हजारों अंडे रखती हैं, उन्हें बाहर निकाल लाती हैं और फिर कहीं भी ऊपर की तरफ चढ़ाई करती हैं। वे अपने अंडों को सूखी और सुरक्षित जगह तक पहुंचाने की कोशिश करती हैं ताकि उनमें से बच्चे निकल सकें। इस दौरान उनका मूवमेंट बहुत तेज होता है। इस तरह से लोग समझ जाते हैं कि चींटी अंडा लेकर निकल रही है, मतलब बारिश होने वाली है। वहीं जब चींटियां बड़ी तादाद में अंडा छोड़कर जाती हैं या दिखाई देने लगती हैं, तब ऐसा माना जाता है कि अब बारिश नहीं होगी या फिर बहुत कम होगी। फिलहाल बारिश का सीजन खत्म होने के कगार पर पहुंच गया है।

एक अक्टूबर से महंगे हो सकते हैं एसी, अभी खरीदारी पर मिल रही बढ़िया डील

त्योहारी सीजन शुरू होने से पहले एसी खरीदने की तैयारी कर रहे लोगों के लिए यह काम की खबर है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, एक अक्टूबर से एसी और कुछ दूसरे घरेलू इलेक्ट्रॉनिक सामान की कीमतें बढ़ सकती हैं। कच्चे माल की बढ़ती लागत को इसकी प्रमुख वजह बताया जा रहा है। ऐसे में अगर घर में नया एसी लगाने की योजना है तो मौजूदा ऑफर पर नजर डालना फायदेमंद हो सकता है। बाजार में इस समय 1.5 टन और 2 टन क्षमता वाले कई मॉडल पर ऑफर मिल रहे हैं। **1.5 टन में कई विकल्प:** मध्यम आकार के कमरे के लिए 1.5 टन का एसी आमतौर पर पसंद किया जाता है। इस श्रेणी में लॉयड का इन्वर्टर स्प्लिट एसी करीब 30 हजार रुपए में उपलब्ध है। इसमें जरूरत के अनुसार कूलिंग क्षमता बदलने की सुविधा है। साथ ही हवा को कमरे में चारों तरफ पहुंचाने और तेजी से ठंड करने जैसे फीचर मिलते हैं। कुछ बैंक कांड से भुगतान करने पर अतिरिक्त छूट भी मिल सकती है। गोदरेज का 1.5 टन का इन्वर्टर स्प्लिट एसी करीब 27,500 रुपए में उपलब्ध है। यह ऊर्जा बचत के लिए 5-स्टार रेटिंग के साथ आता है। इसमें कूलिंग को जरूरत के

मुताबिक बदलने की सुविधा और धूल रोकने वाला फिल्टर दिया गया है। बैंक ऑफर के साथ कीमत और कम हो सकती है। अगर स्प्लिट एसी के बजाय फ्लैट एसी चाहिए तो वोल्टास का 1.5 टन मॉडल करीब 29 हजार रुपए में उपलब्ध है। इसमें तेज कूलिंग और कॉपर कंडेंसर दिया गया है। यह उन लोगों के लिए विकल्प हो सकता है, जिनके कमरे में विंडो एसी लगाने की व्यवस्था पहले से है। **2 टन में बड़े कमरे के लिए विकल्प:** बड़े कमरे या ज्यादा कूलिंग की जरूरत वाले स्थान के लिए 2 टन एसी देखे जा सकते हैं। हिलाची का 2 टन इन्वर्टर स्प्लिट एसी करीब 48,500 रुपए में उपलब्ध है। इसमें कमरे में चारों तरफ हवा पहुंचाने, सफाई और हवा को बेहतर रखने वाले फीचर दिए गए हैं। कंपनी की ओर से लंबी वारंटी भी मिलती है। बैंक कांड और अन्य ऑफर से कीमत कुछ कम हो सकती है। गोदरेज का 2 टन इन्वर्टर स्प्लिट एसी करीब 42 से 44 हजार रुपए में मिल रहा है। इसमें गर्म मौसम में भी तेज कूलिंग, कूलिंग क्षमता को जरूरत के अनुसार बदलने और हवा को साफ रखने वाले फीचर दिए गए हैं। कंपनी की ओर से कंप्रेसर पर लंबी वारंटी मिलती है।

विश्व हृदय दिवस पर विशेष

दिल का मामला है, हर धड़कन कुछ कहती है.. बढ़ते जोखिम और इसके कारकों को समझें

ऋतुपर्ण दवे

स्तंभकार



आज विश्व हृदय दिवस है। पिछले एक दशक में, स्वास्थ्य हृदय के महत्व को समझने वालों की संख्या में वृद्धि जरूर हुई है लेकिन साथ ही दुखद पहलू यह भी है कि हृदय संबंधी विकारों से पीड़ित लोगों की संख्या में भी तेजी से बढ़ीतरी हुई है। दरअसल, गतिहीन जीवनशैली, खराब खान-पान और बढ़ता तनाव लोगों की आम दिनचर्या को प्रभावित कर रहा है। इसी के चलते हृदय रोग दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में सबसे बड़ी स्वास्थ्य चुनौतियों में से एक बनकर उभरा है। लेकिन यह भी सही है कि जागरूकता, नियमित जांच और स्वस्थ जीवनशैली के जरिए हृदय संबंधी बहुतेरी समस्याओं को रोका जा सकता है या बेहतर जीवनशैली से प्रबंधित किया जा सकता है।

स्वास्थ्य संबंधी इन्हीं सब कारकों से विश्व हृदय दिवस की परिकल्पना को साकार कर एक दिन विशेष इसे पूरे विश्व में मनाने के निश्चय किया गया ताकि लोगों को इस रोग की बारीकी और शुरुआती लक्षणों को पहचानने में मदद मिल सके। कम से कम इतनी जागरूकता तो आए कि लोग जरूरत पड़ने पर प्राथमिक उपचार और त्वरित स्वास्थ्य सेवा प्राप्त करने की दिशा में जागरूक हो सकें। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, विश्व में सबसे ज्यादा मौतें हृदय रोग से होती हैं। हर साल लगभग एक करोड़ अस्सी लाख लोग इसकी वजह से अपनी जान गंवा देते हैं

विश्व हृदय दिवस की शुरुआत वर्ष 2000 में विश्व हृदय महासंघ द्वारा विश्व स्वास्थ्य संगठन के सहयोग से की गई। इसका उद्देश्य हृदय रोगों और उनकी रोकथाम के लिए आवश्यक उपायों के बारे में वैश्विक जागरूकता पैदा करना था। यह दिन हर साल 29 सितंबर को मनाया जाता है, जो दुनिया भर के व्यक्तियों, स्वास्थ्य संगठनों और समुदायों को हृदय स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने और निवारक उपायों को प्रोत्साहित करने के लिए एक साथ लाता है। हृदय रोग के बढ़ते जोखिम और इसके कारकों को समझने, चेतावनी संकेतों को पहचानने और स्वस्थ आदतों को अपनाने के महत्व पर प्रकाश डालने के लिए इस पहल की शुरुआत की गई थी जो सार्थक प्रतीत हो रही है। अब यह विगत 26 वर्षों से, समूचे विश्व में स्वस्थ हृदय को लेकर जागरूकता फैलाने, रोकथाम और प्रारंभिक देखभाल के प्रयासों को प्रोत्साहित करने के लिए एक वैश्विक मंच बन गया है। हर वर्ष यह दिन एक अलग थीम के साथ मनाया जाता है। इस बार इस दिन पर विश्व हृदय

महासंघ ने डॉट मिस ए बीट थीम रखी है जिसमें काफी कुछ संकेत छुपे हैं। इस संदेश को दोहराया गया है कि हृदय रोग अक्सर गंभीर जटिलताओं का कारण बनने तक अनेकधा रह जाता है। हार्ट अटैक आने से कुछ हफ्ते पहले सीने में हल्का दर्द, अत्यधिक थकान और सांस फूलने जैसे संकेत मिलने लगते हैं। एसीडिटी, सीने में हल्का दबाव, जकड़न या भारीपन महसूस होना, जो काम करने पर बढ़ता है और आराम करने पर कम हो जाता है। बिना किसी भारी काम के हर समय बहुत ज्यादा थका हुआ और कम ऊर्जा महसूस होना। सांस लेने में तकलीफ जैसे सीढ़ियां चढ़ने या सामान्य काम करने के दौरान अचानक सांस फूलना। शरीर के अन्य हिस्सों में दर्द, जबड़े में जकड़न, गर्दन, पीठ, कंधे या बाएं हाथ तक फैलना। ठंडा पसीना और बिना किसी मेहनत के चक्कर आना, अचानक से ठंडा पसीना आना, उल्टी जैसा महसूस करना। अचानक नींद न आना या सोते वक़्त बेचैनी महसूस होना आदि इसके संकेत हैं। 2026 का अभियान तीन प्रमुख संदेशों पर आधारित है लक्षणों को पहचानें, अपने दिल की रक्षा करें, जीवन शैली परिवर्तन में समय के साथ बदलाव करें। जरा सी आहत होने पर तुरंत चिकित्सकीय मदद लें। दरअसल, हृदय रोग को लेकर एक भ्रान्ति भी है कि यह थुड़्ठ वयस्कों से जोड़ा जाता है, लेकिन यह किसी भी उम्र के लोगों को प्रभावित कर सकता है। उच्च रक्तचाप, मधुमेह, मोटापा, धूम्रपान, दीर्घकालिक तनाव, शारीरिक निष्क्रियता, अपर्याप्त नींद और हृदय रोग का पारिवारिक इतिहास जैसे कारक समय के साथ जोखिम को बढ़ा सकते हैं। इनमें से कुछ जोखिम धीरे-धीरे विकसित होते हैं और स्थिति गंभीर होने तक स्पष्ट लक्षण दिखाई नहीं देते हैं। ऐसी स्थिति में दिल के बचाव के लिए संतुलित आहार, शारीरिक रूप से सक्रिय रहना, तंबाकू से परहेज और रक्तचाप को नियंत्रित रखने जैसे छोटी-छोटी नियमित आदतें काफी हद तक जोखिम को कम कर सकती हैं। इनमें कई जोखिम की पहचान या संकेत हमारा शरीर दे देता है। सच तो यह है कि हृदय की धड़कन को पहचानने की कला से भी काफी हद तक इस रोग को समझ कर समय रहते चेता जा सकता है। एक स्वस्थ व्यक्ति की हृदय की धड़कन 60 से 100 प्रति मिनट होनी चाहिए। इसके लिए नियमित रूप से चिकित्सकीय परामर्श व जाँच की आजकल हर कहीं आसानी से सुविधाएं उपलब्ध हैं। हृदय की एक-एक धड़कन महत्वपूर्ण है। इसलिए डॉट मिस ए बीट थीम के साथ इस बार हृदय संबंधी रोगों को लेकर जन-जागरूकता को और फैलाएं।

-यह लेखक के अपने विचार हैं।

महाकौशल के विकास को नई रफ्तार, जबलपुर बनेगा मेट्रोपोलिटन सिटी

इंडस्ट्रियल कॉरिडोर से जुड़ेगा इंदौर-भोपाल-जबलपुर, कटनी में लॉजिस्टिक हब की तैयारी

भोपाल, दोपहर मेट्रो

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि महाकौशल और जबलपुर क्षेत्र के समग्र विकास के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। जबलपुर सहित पूरे महाकौशल अंचल में उद्योग, व्यापार, पर्यटन, शिक्षा, अधोसंरचना और रोजगार के नए अवसर विकसित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि जबलपुर को भविष्य की जरूरतों के अनुरूप मेट्रोपोलिटन सिटी के रूप में विकसित किया जाएगा।

डॉ. यादव मुख्यमंत्री निवास के संवाद सभाकक्ष में महाकौशल चेम्बर ऑफ कॉमर्स और जबलपुर व्यापारी संघ के प्रतिनिधियों के साथ क्षेत्र के विकास को लेकर चर्चा कर रहे थे। इस दौरान व्यापारी प्रतिनिधियों ने क्षेत्र के लिए जनहितैषी निर्णयों और प्रदेश में व्यापारी कल्याण बोर्ड गठित करने की पहल के लिए मुख्यमंत्री का अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि महाकौशल में उद्योग और व्यापार की अपार संभावनाएं हैं। जबलपुर में औद्योगिक क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ जल्द ही विशेष समग्री आयोजित की जाएगी, ताकि ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट-2027 से पहले जबलपुर अंचल को निवेश का अधिकतम लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि जिस तरह ग्वालियर में टेलीकॉम मैनुफैक्चरिंग जोन विकसित किया जा रहा है, उसी प्रकार जबलपुर को आईटी और माइनिंग सेक्टर में अवसर मिलना चाहिए। प्रदेश में औद्योगिक गतिविधियों को गति देने के लिए इंदौर-भोपाल-जबलपुर को विशेष इंडस्ट्रियल कॉरिडोर से जोड़ा जाएगा।



कटनी में लॉजिस्टिक हब, माइनिंग को मिलेगा फायदा

व्यापारी संघ की ओर से महाकौशल में लॉजिस्टिक हब विकसित करने का सुझाव दिया गया। मुख्यमंत्री ने इस पर सहमति जताते हुए कहा कि कटनी जिले में माइनिंग सेक्टर के विकास की बड़ी संभावनाएं हैं। ऐसे में कटनी में लॉजिस्टिक हब विकसित होने से व्यापारिक और औद्योगिक गतिविधियों को व्यापक लाभ मिल सकता है। बैठक में सेमीकंडक्टर, मेडिकल यूनिवर्सिटी, माइनिंग, लॉजिस्टिक्स, होटल इंडस्ट्री, पर्यटन, ऑटोमोबाइल, अधोसंरचना, शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम जैसे क्षेत्रों में विकास की संभावनाओं पर भी विचार-विमर्श हुआ।

जबलपुर के मास्टर प्लान में व्यापारी देंगे सुझाव

मुख्यमंत्री ने कहा कि भोपाल और इंदौर को मेट्रोपोलिटन सिटी के रूप में विकसित करने की दिशा में काम किया जा रहा है। अब जबलपुर को भी मेट्रोपोलिटन सिटी के रूप में विकसित किया जाएगा। उन्होंने व्यापारी संगठनों से जबलपुर के भविष्य को ध्यान में रखते हुए मास्टर प्लान के लिए सुझाव देने का आह्वान किया। इन सुझावों को मास्टर प्लान के ड्राफ्ट में शामिल करने की बात मुख्यमंत्री ने कही।

पर्यटन को मिलेगा नया विस्तार

मुख्यमंत्री ने कहा कि महाकौशल क्षेत्र में पर्यटन की व्यापक संभावनाएं हैं। जबलपुर के साथ मंडला, डिंडीरी, बालाघाट, सिवनी, कटनी, पांडुरा, छिंदवाड़ा और नरसिंहपुर में पर्यटन गतिविधियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। कान्हा नेशनल पार्क की अंतरराष्ट्रीय पहचान का लाभ पूरे क्षेत्र को दिलाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

चर्चा में पूर्व गृहमंत्री का बयान

सांप-जुगनू की कहानी सुनाकर नरोत्तम ने दिया सियासी संदेश, बोले- चमक देखी नहीं जा रही

शिवपुरी, दोपहर मेट्रो

पूर्व गृहमंत्री और भाजपा नेता डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने शिवपुरी में ब्राह्मण समाज के सम्मान समारोह के दौरान सांप और जुगनू की कहानी सुनाकर राजनीतिक हलकों में चर्चा छेड़ दी। उन्होंने किसी नेता का नाम लिए बिना ऐसी बात कही, जिसे उनकी अपनी पार्टी के भीतर चल रही सियासी हलचल से जोड़कर देखा जा रहा है। भाषण के दौरान उन्होंने बताया कि किस तरह एक सांप जुगनू का लगातार पीछा करता है और पूछने पर कहता है कि उसे उसकी चमक देखी नहीं जा रही। उनके इस कथन के बाद कार्यक्रम में मौजूद समर्थकों ने नारेबाजी शुरू कर दी।



डॉ. मिश्रा ने कहा कि एक मित्र ने उनसे पूछा कि जब वे कुछ बोल भी नहीं रहे हैं, तो फिर उनकी आलोचना क्यों की जा रही है। इस पर उन्होंने जवाब दिया कि वे राजनीतिक व्यक्ति हैं और राजनीति में कोई भी बात वायरल हो जाती है। इसके बाद उन्होंने एक किस्सा सुनाने की बात कही। उन्होंने बताया कि एक सांप लगातार जुगनू का पीछा कर रहा था। जुगनू ने एक जगह रुककर सांप से पूछा कि क्या उनकी

अपने भाषण में नहीं लिया किसी नेता का नाम

डॉ. मिश्रा के अनुसार, सांप ने जुगनू से कहा कि न तो उसकी कोई दुश्मनी है और न ही कोई पुरानी अदवात, लेकिन उस जुगनू की चमक देखी नहीं जा रही है। इस कहानी के माध्यम से उन्होंने अपनी बात रखी। हालांकि, उन्होंने अपने भाषण में किसी व्यक्ति या नेता का नाम नहीं लिया। कहानी सुनाने के बाद कार्यक्रम में मौजूद कार्यकर्ताओं ने डॉ. मिश्रा के समर्थन में नारे लगाए। समर्थकों ने कहा, दादा तुम संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं और हमारा नेता कैसा हो, नरोत्तम मिश्रा जैसा हो।

कोई दुश्मनी है या पुरानी अदवात है। सांप ने इससे इनकार किया। जुगनू ने फिर पूछा कि जब कोई दुश्मनी नहीं है, तो वह उसकी जान के पीछे क्यों पड़ रहा है।

किसके लिए था संदेश, राजनीतिक हलकों में चर्चा

डॉ. मिश्रा के इस बयान को लेकर राजनीतिक गलियारों में अलग-अलग तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। कुछ लोग इसे भाजपा के भीतर की सियासत से जोड़कर देख रहे हैं, तो कुछ इसे उनके राजनीतिक विरोधियों के लिए संदेश मान रहे हैं। शिवपुरी में दिए गए इस बयान को केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया से जोड़कर भी सवाल उठाए जा रहे हैं। हालांकि, डॉ. मिश्रा ने अपने भाषण में सिंधिया या किसी अन्य नेता का नाम नहीं लिया। पूर्व गृहमंत्री के राजनीतिक भविष्य और पार्टी में उनकी भूमिका को लेकर भी समय-समय पर चर्चाएं होती रही हैं। ऐसे में उनके इस बयान को उनकी मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों से जोड़कर देखा जा रहा है। समर्थकों की नारेबाजी ने भी इस चर्चा को और हवा दी।



भूल भुलैया बनी 'भोपाल दर्शन', पर्यटकों के लिए शान रही बस आज सैर-सपाटा परिसर में खा रही जंग

भोपाल, दोपहर मेट्रो

मध्य प्रदेश की राजधानी घूमने आने वाले पर्यटकों के लिए कभी आकर्षण का केंद्र रही भोपाल दर्शन गाड़ी अब खुद ही बदहाली का शिकार है। साल 2008 में शुरू हुई यह गाड़ी शहर के 12 से 14 प्रमुख दर्शनीय स्थलों की सैर कराती थी, लेकिन अब करीब दो साल से ज्यादा समय से यह सेवा बंद पड़ी है और गाड़ी सैर सपाटा परिसर में जंग खा रही है।

शुरू होगी भी या नहीं ?

गाड़ी का रजिस्ट्रेशन खत्म होने के बाद इसे दोबारा शुरू करने की दिशा में अब तक कोई ठोस पहल नहीं हुई है। ऐसे में सवाल है कि जिस सुविधा से पर्यटकों को एक ही सफर में भोपाल के प्रमुख पर्यटन स्थलों की सैर कराई जाती थी वह आखिर कब वापस शुरू होगी। शुरू होगी भी या फिर नहीं?

18 साल पहले हुई थी शुरुआत

साल 2008 में शुरू हुई भोपाल दर्शन गाड़ी में एक बार में करीब 30 पर्यटकों को बैठाकर तीन से चार घंटे में शहर के प्रमुख पर्यटन स्थलों का भ्रमण कराया जाता था। शुरुआत में इसका किराया 100 रुपए रखा गया था, जिसे करीब पांच साल बाद बढ़ाकर 250 रुपए कर दिया गया। गाड़ी से पर्यटक जनजातीय संग्रहालय, भारत भवन, ताज-उल-मसाजिद, बिरला मंदिर, विधानसभा, मछली घर समेत भोपाल के कई प्रमुख स्थलों की सैर करते थे। लंबे समय तक यह सुविधा बाहर से आने वाले पर्यटकों के लिए शहर घूमने का आसान जरिया बनी रही, लेकिन करीब दो साल से भोपाल दर्शन गाड़ी का पहिया थमा हुआ है। 15 साल की अवधि पूरी होने के बाद गाड़ी का रजिस्ट्रेशन खत्म हो गया और इसके बाद से यह सैर सपाटा परिसर में खड़ी है।

पर्यटकों ने कही यह बात

अब हालत ये है कि गाड़ी चलने के बजाय खुले में खड़ी-खड़ी जंग खा रही है। पर्यटकों का कहना है कि भोपाल जैसे पर्यटन शहर में गुप्त में आने वाले लोगों के लिए इस तरह की सुविधा उपयोगी है। ऐसे में सवाल यही है कि भोपाल दर्शन की सैर फिर शुरू होगी या यह गाड़ी सिर्फ भोपाल की पुरानी पर्यटन याद बनकर रह जाएगी और सैर सपाटे में खड़ी-खड़ी कबाड़ हो जाएगी। पर्यटकों का कहना है कि भोपाल दर्शन जैसी सुविधा से कम समय में शहर के कई प्रमुख पर्यटन स्थल घूमने को मिलते हैं। बाहर से आने वाले पर्यटकों के लिए यह काफी सुविधाजनक व्यवस्था थी।

सीएसआर भागीदारी को नई गति देने 30 को भोपाल में राज्य स्तरीय कॉन्क्लेव

भोपाल। मध्यप्रदेश में महिलाओं और बच्चों के समावेशी विकास में कॉरपोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की भागीदारी को व्यापक और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से 30 सितंबर को भोपाल में राज्य स्तरीय सीएसआर भागीदारी कॉन्क्लेव आयोजित किया जाएगा। महिलाओं और बच्चों में निवेश मध्यप्रदेश के समावेशी विकास के लिए सीएसआर की संभावनाओं का उपयोग विषय पर आयोजित इस सम्मेलन का शुभारंभ मंत्री निर्मला भूरिया करेंगी। कॉन्क्लेव का उद्देश्य प्रदेश में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित योजनाओं और कार्यक्रमों में कॉरपोरेट संस्थाओं, सीएसआर फाउंडेशन, सामाजिक संगठनों और विकास संस्थाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना है।

स्वामित्व योजना पर सरकार सख्त रजिस्ट्री से इनकार करने वाले पटवारियों पर होगी कार्रवाई, कलेक्टरों को निर्देश

भोपाल, दोपहर मेट्रो

स्वामित्व योजना के तहत रजिस्ट्री का काम करने से पटवारियों के इनकार के बीच सरकार ने अब सख्त रुख अपनाया है। मुख्य सचिव अशोक वर्णवाल ने सभी कलेक्टरों को निर्देश दिए हैं कि वे पटवारियों से सरकार के आदेश के अनुसार रजिस्ट्री का काम कराएं। आदेश का पालन नहीं करने वाले अधिकारियों-कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई करने को भी कहा गया है। मुख्य सचिव ने कलेक्टरों को भेजे निर्देश में कहा है कि स्वामित्व योजना के तहत गुरुवार से शनिवार तक रजिस्ट्री का काम कराया जाए।

राजस्व विभाग रहेगा नोडल एजेंसी

प्रमुख सचिव राजस्व की ओर से जारी निर्देश में स्वामित्व योजना के काम की जिम्मेदारियां भी स्पष्ट की गई हैं। योजना के लिए राजस्व विभाग को नोडल एजेंसी बनाया गया है। विभाग योजना के समन्वय, क्रियान्वयन और निगरानी का काम करेगा। रजिस्ट्री प्रक्रिया में समन्वय की जिम्मेदारी वाणिज्यिक कर विभाग को दी गई है। वहीं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग तकनीकी सहायता उपलब्ध कराएगा। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग स्थानीय स्तर पर अधिकारियों को काम में सहयोग करेगा। सरकार ने पटवारियों को उनके पद के अनुरूप मैदानी स्तर पर काम करने के निर्देश दिए हैं। जिलों में पूरी योजना के संचालन की जिम्मेदारी कलेक्टरों की रहेगी।

अधिकारियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि तय अवधि में रजिस्ट्री की प्रक्रिया पूरी हो। सरकार ने स्पष्ट किया है कि बुधवार तक संबंधित अधिकारियों द्वारा काम शुरू नहीं करने की स्थिति में कार्रवाई की जा सकती है। इससे लंबे समय से रजिस्ट्री के काम को लेकर चल रहे गतिरोध के बीच प्रशासन के सख्त रुख के संकेत मिले हैं।

मप्र में राशन विक्रेताओं का बड़ा ऐलान

1 अक्टूबर से 28 हजार सरकारी उचित मूल्य की दुकानों पर ताला

भोपाल, दोपहर मेट्रो

भोपाल। मध्य प्रदेश में राशन वितरण व्यवस्था ठप होने वाली है। मध्य प्रदेश राशन विक्रेता संघ ने पांच सूत्रीय मांगों को लेकर प्रदेशव्यापी आंदोलन का ऐलान किया है। संघ ने घोषणा की है कि 1 अक्टूबर से प्रदेश की सभी 28 हजार उचित मूल्य की सरकारी राशन दुकानें अतिरिक्तकाल के लिए बंद रहेंगी। इसी कड़ी में आज प्रदेशभर के जिला मुख्यालयों पर विक्रेताओं ने प्रदर्शन किया। भोपाल में बड़ी संख्या में राशन विक्रेता कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचे और जमकर नारेबाजी की। प्रदर्शन के दौरान आक्रोशित विक्रेताओं ने कलेक्टर कार्यालय का मुख्य गेट बंद कर दिया, जिससे कुछ देर के लिए अफरा-तफरी का माहौल बन गया।

विक्रेताओं की प्रमुख पांच मांगें

विक्रेताओं की प्रमुख पांच मांगें हैं। पहली, खाद्यान्न वितरण पर मिलने वाले कमीशन को बढ़ाकर न्यूनतम 200 रुपए प्रति क्विंटल किया जाए। दूसरी, शहरी और ग्रामीण सभी विक्रेताओं के लिए 40 हजार रुपए प्रतिमाह मानदेय या आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। तीसरी, परिवहन और तेल के दौरान होने वाले नुकसान को देखते हुए प्रति क्विंटल एक किलो की छूट दी जाए। चौथी, हर महीने के कमीशन का भुगतान 5 तारीख तक अनिवार्य रूप से किया जाए। और पांचवीं, सेवा सहकारी समितियों और वन समितियों को शासन स्तर से निर्देश जारी हों कि वे अपने अधीन काम करने वाले विक्रेताओं का भुगतान समय पर करें।

श्रीराम दर्शन पर अंतरराष्ट्रीय बौद्धिक सम्मेलन: शोधार्थियों से शोध आलेख आमंत्रित

भोपाल। श्रीराम के जीवन-दर्शन, आदर्शों, रामायण की वैश्विक परंपरा और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों पर देश-दुनिया के शोधार्थी भोपाल में मंथन करेंगे। मध्यप्रदेश शासन के संस्कृति विभाग के श्रीरामचंद्र पथ गमन न्यास की ओर से 12 से 18 अक्टूबर तक आयोजित होने वाले अंतरराष्ट्रीय श्रीरामलीला उत्सव के तहत 12 से 14 अक्टूबर तक रविंद्र भवन में %अंतरराष्ट्रीय बौद्धिक सम्मेलन- अध्यात्म, मर्यादा और सुशासन: श्रीराम दर्शन का वैश्विक समागम होगा। सम्मेलन के लिए शोधार्थियों और अध्येताओं से शोध आलेख व प्रमाणित शोध कार्य आमंत्रित किए गए हैं। संस्कृति संचालक एवं श्रीरामचंद्र पथ गमन न्यास के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एनपी नाथदेवी ने बताया कि प्राप्त शोध कार्यों का समिति परीक्षण और चयन करेगी। चयनित उपयुक्त शोध आलेखों को सम्मेलन के बाद संगोष्ठी पुस्तिका के रूप में प्रकाशित किया जा सकेगा। प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र भी दिए जा सकेंगे।

संवेदनशीलता और नवाचार से आधुनिक बन रही पुलिसिंग

भोपाल, दोपहर मेट्रो

पुलिसिंग में तकनीक के बढ़ते इस्तेमाल के साथ पुलिस अधिकारियों के लिए संवेदनशीलता और जनविश्वास बनाए रखना भी जरूरी है। पुलिस अधिकारी का व्यवहार अच्छा और संवेदनशील होना चाहिए तथा जरूरत के समय जनता की सहायता के लिए तत्पर रहना उनकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। यह बात पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाणा ने पुलिस मुख्यालय के कॉफ़्रेस हॉल में उत्तर पूर्वी पुलिस अकादमी के प्रशिक्षु पुलिस अधिकारियों से संवाद के दौरान कही।

डीजीपी ने प्रशिक्षु अधिकारियों को मध्यप्रदेश पुलिस की कार्यप्रणाली और आधुनिक पुलिसिंग से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि डायल-112 एवं एफआरबी



व्यवस्था, सीसीटीएनएस, आईसीजेएस सहित विभिन्न तकनीकी प्रणालियों के माध्यम से पुलिस की कार्यक्षमता और त्वरित कार्रवाई को मजबूत किया जा रहा है। ई-ऑफिस के माध्यम से पुलिस कार्यालयों को पेपरलेस बनाने की दिशा में भी काम हो रहा है। वहीं ईएचआरएमएस में करीब एक लाख पुलिसकर्मियों का रिकॉर्ड ऑनलाइन किया जा चुका है। डीजीपी मकवाणा ने मध्यप्रदेश में नक्सल समस्या के उन्मूलन के लिए अपनाई गई पुलिसिंग और रणनीति के बारे में प्रशिक्षुओं को बताया।

मेट्रो एंकर

यात्रियों की जेब से राउंडअप के नाम पर 5 साल में 458.14 करोड़ काटे

हर ऑनलाइन टिकट पर 1 से 4 रुपये का अंतर रेलवे ने नियम के अनुसार शुल्क वसूली बताया

भोपाल, दोपहर मेट्रो

भारतीय रेलवे में टिकट का मूल्य तय करने का एक छिपा हुआ सूत्र यात्रियों की जेब से रोजाना औसतन 34 से 35 लाख रुपये अकारण निकाल रहा है। केवल ऑनलाइन टिकटों की बात करें तो प्रत्येक टिकट पर यह अतिरिक्त वसूली 1 रुपये से 4 रुपये तक की है। पिछले 5 वर्षों में इस सूत्र से रेलवे ने अपने खजाने में कम से कम 458.14 करोड़ रुपये जोड़े हैं। मजदोर यह कि यह वसूली इतनी चुपचाप हो रही है कि उपभोक्ताओं को इस कटौती की



जानकारी तक नहीं है। अगर आप ऑनलाइन बुक किए गए टिकट में किराए का विवरण देखें तो पाएंगे कि उसमें बेस फेयर, रिजर्वेशन चार्ज, सुपरफास्ट चार्ज, डायनेमिक चार्ज, जीएसटी, कैटरिंग

17 लाख ऑनलाइन बुकिंग

इस समय आईआरसीटीसी के पोर्टल के जरिए प्रतिदिन 17 लाख से अधिक ऑनलाइन टिकट बुक हो रहे हैं। प्रत्येक टिकट पर औसत दो रुपये ही रखा जाए तो एक दिन में रेलवे के पास 34 से 35 लाख रुपये की बड़ी रकम जमा होती है। वर्ष भर में यह रकम 124 से 127 करोड़ हो जाती है। पिछले पांच वर्षों में रेलवे ने 229.07 करोड़ ऑनलाइन

टिकट बेचकर औसतन 458.14 करोड़ रुपया बनाया है। भोपाल के सेवानिवृत्त अभियंता अरुण शुक्ला ने रेलवे बोर्ड को इसकी शिकायत भेजी है। उनका कहना है कि ऑनलाइन भुगतान में तो खुदरा पैसे की समस्या नहीं होती। ऐसे में 1711 रुपये के किराये पर 1715 रुपये भुगतान लेने की व्यवस्था समझ से परे है।

चार्जों जैसे मद दिखेंगे। सबसे अंत में टोटल अमाउंट मद में वह रकम दिखेगी जिसका आपने वास्तव में भुगतान किया था। लेकिन इन मदों को जोड़ा जाए तो यह टोटल अमाउंट से मेल नहीं खाता। जैसे- दिल्ली से भोपाल तक के

एक टिकट में बेस फेयर 892 है, उसपर 40 रुपये का रिजर्वेशन चार्ज, 45 रुपये का सुरफास्ट चार्ज, 357 रुपये का डाइनेमिक चार्ज, 67 रुपये जीएसटी और 310 रुपये कैटरिंग चार्ज का ब्यौरा दर्ज है। इनको जोड़ने पर कुल

यह पांच के गुणक का खेल

नियम है कि द्वितीय श्रेणी साधारण (उपनगरीय) किराए को छोड़कर सभी श्रेणियों के किराए में विविध शुल्क जोड़ने के बाद प्राप्त राशि को अगले उच्चतम 5 रुपये के गुणक में पूर्णांकित (राउंडअप) किया जाएगा। यानी अगर सभी शुल्कों का जोड़ 102 रुपये आता है तो लिया जाएगा 105 रुपये। पहले गुणक से एक रुपया ऊपर होने पर नीचे वाली पूर्णांकित संख्या ली जाती थी। यानी 101 रुपया होने पर 100 रुपया लिया जाता था, लेकिन कोरोना काल के बाद दूसरा वाला नियम लागू खत्म ही कर दिया गया है।

रकम होती है एक हजार 711 रुपये। लेकिन टिकट पर टोटल अमाउंट लिखा है 1 हजार 715 रुपये। उपभोक्ता को इसी का भुगतान करना होता है। यानी उपभोक्ता को चार रुपये अतिरिक्त देने पड़ रहे हैं जिसका कोई ब्योरा नहीं है।

न्यूज विंडो

निर्माणाधीन बिल्डिंग में लिफ्ट नीचे गिरी, चार श्रमिक हुए घायल



जबलपुर। धनवंतरि नगर स्थित जसूजा सिटी में निर्माणाधीन बहुमंजिला भवन में काम के दौरान मंगलवार को हादसा हो गया। लिफ्ट में खराबी आने के बाद उसका तार जल गया और लिफ्ट नीचे गिर गई। हादसे के समय मौके पर काम कर रहे श्रमिक इसकी चपेट में आ गए। करंट लगने और लिफ्ट की चपेट में आने से उन्नति नगर निवासी महिला श्रमिक सुनीता प्रजापति को गंभीर चोटें आई हैं। उसे उपचार के लिए निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हादसे में अहमद, सरजू और मोहन नामक तीन अन्य श्रमिक भी घायल हुए हैं। घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। घायलों को उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया गया।

महिला कर्मचारियों की बस पर पथराव डायल-112 पहुंची तो भागे आरोपी

धार। ड्यूटी से घर लौट रही महिला कर्मचारियों से भरी बस का कुछ लोगों द्वारा पीछा कर पथराव और तोड़फोड़ का प्रयास करने का मामला सामने आया है। देर रात सूचना मिलने पर डायल-112 की सरदारपुर एफआरवी-11 टीम तत्काल मौके पर पहुंची। बताया गया कि झील कंपनी की बस में सवार महिला कर्मचारियों की बस को कुछ लोग रोकने का प्रयास कर रहे थे और पत्थर मार रहे थे। पुलिस वाहन को देखते ही आरोपी मौके से फरार हो गए। पायलट विष्णु सिंगार और सैनिक 257 धमेंद्र कुमावत ने बस में सवार सभी महिलाओं को सुरक्षित उनके गंतव्य तक पहुंचाया। घटना की सूचना थाना पुलिस को दी गई। सरदारपुर एसडीओपी और थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है।

देवेंद्र रघुवंशी बने प्रदेश मीडिया प्रभारी, ओमवीर सिंह को प्रवक्ता की जिम्मेदारी

गंजबासौदा। अखिल भारतीय अखंड रघुवंशी क्षत्रिय परिषद ने संगठनात्मक विस्तार के तहत नई नियुक्तियों की हैं। प्रदेश अध्यक्ष प्रह्लाद सिंह रघुवंशी की अनुशंसा और राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. उमाशंकर रघुवंशी के अनुमोदन पर गंजबासौदा के पत्रकार देवेंद्र रघुवंशी को प्रदेश मीडिया प्रभारी नियुक्त किया गया है। वहीं आरोन के सेवानिवृत्त शिक्षक ओमवीर सिंह रघुवंशी को प्रदेश प्रवक्ता की जिम्मेदारी सौंपी गई है। नियुक्तियों की घोषणा राष्ट्रीय कार्यकारी महासचिव राकेश सिंह रघुवंशी ने की। देवेंद्र लंबे समय से पत्रकारिता और सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं तथा जनहित एवं सामाजिक मुद्दों को प्रमुखता से उठाते रहे हैं। नई जिम्मेदारी में वे परिषद की गतिविधियों और समाजहित के कार्यों को मीडिया तक पहुंचाएंगे। ओमवीर सिंह सामाजिक व आध्यात्मिक गतिविधियों के साथ मंच संचालन से जुड़े रहे हैं। परिषद पदाधिकारियों व समाजजनों ने दोनों को शुभकामनाएं दीं।

सामने आए दो वाहन, बचाने में पलटी कार एयरबैग खुलने से परिवार सुरक्षित



तेंदूखेड़ा। तेंदूखेड़ा-तेजगढ़ मार्ग पर हरई-सिंगौरगढ़ गांव के पास सोमवार सुबह सामने से आ रहे दो वाहनों को बचाने के प्रयास में कार अनियंत्रित होकर तीन पलटी खा गई। हादसे में कार सवार रजक परिवार के सभी लोग सुरक्षित बच गए। जानकारी के अनुसार जबलपुर जिले के रैठरा गांव निवासी परिवार कार से दमोह जा रहा था। ढलान और अंधे मोड़ पर अचानक सामने वाहन आने से चालक कार नियंत्रित नहीं कर सका। कार के तीन पलटी खाने के बाद एयरबैग खुल गए, जिससे बड़ा हादसा टल गया। कुछ लोगों को मामूली अंदरूनी चोटें आईं। सूचना पर डायल-112 और पुलिस मौके पर पहुंची। ग्रामीणों की मदद से ट्रैक्टर से कार को सड़क पर लाया गया। करीब एक घंटे बाद कार स्टार्ट हुई, जिसके बाद परिवार दमोह जाने के बजाय वापस रैठरा लौट गया।

सिटी सेंटर में दौड़ती कार बनी आग का गोला, चालक ने कूदकर बचाई जान



ग्वालियर। शहर के व्यस्त सिटी सेंटर इलाके में सोमवार देर रात चल्ती कार के बोनट में अचानक आग लग गई। बोनट से लपटें उठती देखकर चालक ने तत्काल कार रोक दी और बाहर निकलकर अपनी जान बचाई। कुछ ही देर में आग ने विकराल रूप ले लिया और पूरी कार को अपनी चपेट में ले लिया। घटना के दौरान आसपास मौजूद लोगों में अफरा-तफरी मच गई। पास के एक मार्ट के कर्मचारी ने तत्परा दिखाते हुए अग्निशामक यंत्र की मदद से कार में लगी आग पर काबू पाया। जानकारी के अनुसार कार का नंबर एमपी 07 सीजी 6076 है। समय रहते चालक के बाहर निकलने और आग बुझा दिए जाने से बड़ा हादसा टल गया। आग लगने का कारण फिलहाल स्पष्ट नहीं हो सका है।

चारा काटने युवक गया, करंट से मौत

दोपहर तक घर नहीं लौटा तो परिजन तलाशते हुए खेत पहुंचे

तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो
थाना क्षेत्र के ग्राम बम्हैरी पिंडरई में सोमवार सुबह खेत पर मवेशियों के लिए चारा काटने गए 30 वर्षीय युवक की करंट की चपेट में आने से मौत हो गई। युवक के दोपहर तक घर नहीं लौटने पर परिजन उसकी तलाश करते हुए खेत पहुंचे, जहां उसका शव पड़ा मिला। पास में विद्युत डोरी पड़ी होने से करंट लगने की आशंका जताई गई।
जानकारी के अनुसार राजेंद्र पिता तिलक सिंह लोधी (30), निवासी बम्हैरी पिंडरई, सोमवार सुबह करीब 8 बजे मवेशियों के लिए चारा काटने खेत गया था। चारा काटने के



दौरान वह खेत में फैली विद्युत डोरी की चपेट में आ गया। करंट लगने से उसकी मौके पर ही मौत हो गई। राजेंद्र के दोपहर करीब 1 बजे तक घर नहीं पहुंचने पर परिजन चिंतित होकर उसकी तलाश में खेत पहुंचे। वहां राजेंद्र को मृत अवस्था में पड़ा देखकर उनके होश उड़ गए। घटनास्थल पर विद्युत डोरी पड़ी होने के कारण परिजनों ने पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण कर शव को पोस्टमार्टम के लिए तेंदूखेड़ा स्वास्थ्य केंद्र भेजा। पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। पुलिस ने मर्ग कायम कर घटना के कारणों की जांच शुरू कर दी है। राजेंद्र सोमवार सुबह करीब 8 बजे मवेशियों के लिए चारा काटने खेत गया था। परिजनों को उम्मीद थी कि वह कुछ देर बाद वापस घर लौट आएगा, लेकिन दोपहर करीब 1 बजे तक उसके घर नहीं पहुंचने पर परिजन उसकी तलाश में खेत पहुंचे।

बीआरसी और एसडीएम ने जांच व कार्रवाई का दिया आश्वासन

इमलीडोल स्कूल में छात्रा के हाथ में थमाई झाड़ू, करवाई साफ-सफाई

तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो
तेंदूखेड़ा ब्लॉक के ग्राम इमलीडोल स्थित एकीकृत शासकीय माध्यमिक विद्यालय में बच्चों से सफाई कराने का मामला सामने आया है। सोशल मीडिया पर करीब पांच दिन पुराना वीडियो सामने आया है, जिसमें एक छात्रा कक्षा में झाड़ू लगाती दिखाई दे रही है, जबकि शिक्षक पास में मौजूद नजर आ रहे हैं। मामले ने स्कूल की व्यवस्थाओं और बच्चों की पढ़ाई पर सवाल खड़े कर दिए हैं। कुछ छात्र-छात्राओं ने आरोप लगाया कि उनसे प्रतिदिन कक्षाओं में झाड़ू लगावाई जाती है। छात्रों का यह भी कहना है कि शिक्षक कई बार निर्धारित समय पर स्कूल नहीं पहुंचते और करीब 11 बजे तक आते हैं, जबकि विद्यालय खुलने का समय 10:30 बजे है। प्रधानाध्यापक प्रकाश मिंज से जब बच्चों से झाड़ू लगवाने को लेकर सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि स्कूल में चपरासी नहीं है। कभी शिक्षक सफाई करते हैं और कभी बच्चे झाड़ू लगा लेते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि 'सभी जगह बच्चे ही झाड़ू लगाते हैं।' वहीं बीआरसी पीएल अहिरवार ने स्पष्ट कहा कि बच्चों से झाड़ू लगवाना गलत है। मामले की जांच कर संबंधितों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा जाएगा। एसडीएम सीजी गोस्वामी ने भी टीम गठित कर जांच कराने की बात कही है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों की लापरवाही सामने आने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।



जगह बच्चे ही झाड़ू लगाते हैं।' नियमों के संबंध में पूछने पर उन्होंने फोन काट दिया। इस स्कूल में जुलाई में बच्चों से मध्याह्न भोजन के बाद जूटी थालियां धुलवाने का मामला भी सामने आया था। ग्रामीणों ने मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की है।

बीआरसी पीएल अहिरवार ने कहा कि बच्चों से झाड़ू लगवाना गलत है। जांच कर संबंधितों को नोटिस दिया जाएगा। एसडीएम सीजी गोस्वामी ने भी टीम गठित कर जांच और लापरवाही मिलने पर कार्रवाई की बात कही है।
‘चपरासी नहीं है, कभी बच्चे भी कर लेते हैं सफाई’
बच्चों से झाड़ू लगवाने के मामले में स्कूल के प्रधानाध्यापक प्रकाश मिंज ने कहा कि विद्यालय में चपरासी नहीं है। इसलिए कभी शिक्षक सफाई कर लेते हैं और कभी बच्चे झाड़ू लगा लेते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि 'सभी जगह बच्चे ही झाड़ू लगाते हैं।' वहीं बीआरसी पीएल अहिरवार ने स्पष्ट कहा कि बच्चों से झाड़ू लगवाना गलत है। मामले की जांच कर संबंधितों को नोटिस जारी कर जवाब मांगा जाएगा। एसडीएम सीजी गोस्वामी ने भी टीम गठित कर जांच कराने की बात कही है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों की लापरवाही सामने आने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

‘रोज लगवाते हैं झाड़ू, पढ़ाई होती है प्रभावित’
इमलीडोल स्कूल के कुछ छात्र-छात्राओं ने आरोप लगाया कि उनसे प्रतिदिन कक्षाओं में झाड़ू लगवाई जाती है। बच्चों के मुताबिक स्कूल की सफाई व्यवस्था की जिम्मेदारी कई बार उन्हीं पर डाल दी जाती है। छात्रों ने यह भी आरोप लगाया कि कुछ शिक्षक निर्धारित समय पर स्कूल नहीं पहुंचते। विद्यालय खुलने का समय सुबह 10:30 बजे बताया गया है, लेकिन कई दिनों में शिक्षक करीब 11 बजे तक पहुंचते हैं। बच्चों का कहना है कि इससे उनकी पढ़ाई प्रभावित होती है। ग्रामीणों ने भी स्कूल की व्यवस्थाओं पर नाराजगी जताते हुए पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराने की मांग की है।

सोयाबीन काटकर लौट रहे मजदूरों की पिकअप को ऑल्टो ने मारी टक्कर, 14 मजदूर घायल

टक्कर के बाद पलटी पिकअप, मची चीख-पुकार; छह मजदूरों को गंभीर हालत में धार जिला अस्पताल भेजा

धार। दोपहर मेट्रो
नालछा क्षेत्र के कागदीपुरा फाटे पर सोमवार दोपहर मजदूरों से भरी पिकअप और ऑल्टो कार की आमने-सामने टक्कर हो गई। टक्कर के बाद दोनों वाहन सड़क से नीचे उतर गए और पिकअप पलट गई। हादसे में पिकअप में सवार 12 मजदूरों समेत कुल 14 लोग घायल हुए हैं। इनमें छह मजदूरों की हालत गंभीर बताई गई है, जिन्हें प्राथमिक उपचार के बाद धार जिला अस्पताल रेफर किया गया। पिकअप क्रमांक एमपी-09 जीएच-8842 में सवार मजदूर इंदौर जिले के मानपुर क्षेत्र के ग्राम जामली में सोयाबीन की कटाई करने गए थे। काम पूरा करने के बाद सभी अपने गांव लौट रहे थे। इसी दौरान कागदीपुरा फाटे पर सामने से आ रही ऑल्टो कार क्रमांक एमपी-13 सीए-4302 से पिकअप



की टक्कर हो गई। हादसे के बाद पिकअप पलटने से उसमें फंसे मजदूरों में चीख-पुकार मच गई। आवाज सुनकर आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंचे और पुलिस व 108 एंबुलेंस को सूचना दी। ग्रामीणों ने पिकअप में फंसे मजदूरों को बाहर निकाला। सभी घायलों को सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया। ऑल्टो में सवार दंपती का निजी

अस्पताल में उपचार चल रहा है। सीबीएमओ डॉ. चमनदीप सिंह अरोरा ने बताया कि 12 मजदूरों का सरकारी अस्पताल में उपचार किया गया, जबकि दो लोग निजी अस्पताल पहुंचे। छह गंभीर घायलों को धार रेफर किया गया है। थाना प्रभारी प्रहलाद डिंडोर ने बताया कि पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है।

मेट्रो एंकर 11 प्रजातियों का बसेरा, पुराने पेड़ों के प्राकृतिक कोटरों में सुरक्षित घोंसले

वीडीटीआर के जंगलों में रात होते ही जागती है उल्लुओं की दुनिया

विशाल रजक, तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो
वीरांगना दुर्गावती टाइगर रिजर्व (वीडीटीआर) के जंगलों में उल्लुओं की 11 प्रजातियां प्राकृतिक आवास में सुरक्षित हैं। पुराने और खोखले सागौन, बीजा व महुआ के पेड़ों के कोटर इनके प्रमुख आश्रय हैं। दिन में कोटरों में विश्राम करने वाले उल्लू रात होते ही शिकार के लिए निकलते हैं। रिजर्व प्रबंधन वन्यजीवों के साथ उल्लुओं के घोंसलों और उड़ान क्षेत्रों की भी निगरानी करता है। इंडियन ईगल आउल, फॉरेस्ट ओवलेट, जंगल ओवलेट, स्पॉटेड ओवलेट, मॉटल्ड वुड आउल, ब्राउन फिश आउल, कॉमन बार्न आउल सहित कई प्रजातियां यहां पाई जाती हैं। विशेषज्ञ उल्लू को स्वस्थ जंगल का संकेतक मानते हैं। वे चूहों और कीट-पतंगों की संख्या नियंत्रित कर प्राकृतिक संतुलन बनाए रखते हैं। डिप्टी डायरेक्टर डॉ. रजनीश कुमार ने बताया कि वीडेटीआर में उल्लुओं की विविधता जैव विविधता के साथ आसपास के खेतों में चूहों और



सरीसृपों को नियंत्रित रखने में भी मदद करती है। खेत-खलिहानों और फसलों की सुरक्षा में इनका योगदान महत्वपूर्ण है।

सरकारी जमीन पर ‘खेल’ का आरोप, 10 पार्षदों ने खोला मोर्चा
ओबेदुल्लागंज। नगर परिषद ओबेदुल्लागंज के वार्ड क्रमांक 4 में सार्वजनिक उपयोग और पार्क के लिए सुरक्षित करीब 2.5 एकड़ शासकीय भूमि को कथित फर्जी दस्तावेजों के जरिए खुद-बुद करने का मामला सामने आया है। मामले को लेकर उपाध्यक्ष नमिता बागीस अग्रवाल सहित 10 पार्षदों ने सीएमओ को ज्ञापन सौंपकर निष्पक्ष जांच की मांग की है। पार्षदों का आरोप है कि नगर परिषद के खर्च से जिस जमीन पर मिट्टी भराई और बाउंड्रीवॉल का निर्माण कराया गया था, उसमें से करीब 5500 वर्गफुट भूमि का कथित फर्जी नामांतरण कर मनगढ़ंत रसीदों व रिकॉर्ड के आधार पर रजिस्ट्रारों करा दी गई। मौके पर केवल 1-3 अस्थायी निर्माण दिखाकर कब्जा दर्शाया गया, जबकि अधिकांश भूमि खाली है। पार्षदों ने अवैध नामांतरण व रजिस्ट्रारों निरस्त कर भूमि शासन के नाम सुरक्षित करने तथा दोषी अधिकारियों-कर्मचारियों पर वैधानिक कार्रवाई की मांग की है।

हनुमान अंश' के बाल कलाकार सात्विक का भव्य स्वागत



गंजबासौदा। 'हनुमान अंश' फिल्म में बाल कलाकार के रूप में पहचान बनाने वाले सात्विक शर्मा का कृष्णापुरा स्थित काली माता मंदिर में भव्य स्वागत एवं सम्मान किया गया। इस दौरान काली मंदिर के पुजारी विशाल दास वैष्णव, कथा व्यास उषेंद्र कृष्ण शास्त्री, लक्ष्मीकांत शास्त्री, धर्मेन्द्र मिश्रा सहित अन्य श्रद्धालु मौजूद रहे। कार्यक्रम में सात्विक ने 'हनुमान अंश' से जुड़े भजनों की प्रस्तुति दी।

संवैधानिक संस्थाओं की मर्यादा रखें: रामरनेही पाठक

नरसिंहपुर। भाजपा जिलाध्यक्ष रामरनेही पाठक ने चुनाव आयोग और स्ट्रक्चर को लेकर कांग्रेस के आरोपों पर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठाने से पहले राजनीतिक दलों को तथ्यों की जांच करनी चाहिए। पाठक ने आरोप लगाया कि कांग्रेस राजनीतिक असफलता का टीकरा संवैधानिक संस्थाओं पर फोड़ रही है। उन्होंने स्ट्रक्चर और फॉर्म-6 से जुड़े मुद्दों पर कांग्रेस के दावों पर सवाल उठाते हुए चुनाव आयोग और न्यायपालिका के निर्णयों का सम्मान करने की बात कही। चुनाव आयोग ने हाल में स्पष्ट किया है कि मूल फॉर्म-6 में बदलाव नहीं किया गया, बल्कि स्ट्रक्चर के तहत अतिरिक्त घोषणा-पत्र जोड़ा गया है।

रतापानी में खेत के पास मिला बाघिन का शव, करंट से मौत की आशंका



ओबेदुल्लागंज। दोपहर मेट्रो
रतापानी टाइगर रिजर्व के दाहोद क्षेत्र में दाहोद डैम के पास धान के खेत से सोमवार को करीब चार साल की बाघिन का शव मिलने से वन विभाग में हड़कंप मच गया। शव के पास बिजली के तार मिले हैं, जिससे प्रथमदृष्टया करंट लगने की आशंका जताई जा रही है। हालांकि मौत का वास्तविक कारण पोस्टमार्टम और फॉरेंसिक जांच के बाद ही स्पष्ट होगा। स्थानीय स्तर पर क्षेत्र में बाघिन की आवाजाही की बात सामने आई थी। घटना के बाद वन विभाग की

गश्त और निगरानी व्यवस्था को लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। वन्यजीव कार्यकर्ता अजय दुबे ने दाहोद क्षेत्र में पर्याप्त गश्त नहीं होने का आरोप लगाते हुए जांच की मांग की है। जानकारी के अनुसार वरिष्ठ वन अधिकारी मौके पर पहुंचे और घटनास्थल की जांच शुरू की। बिजली के तारों की भी पड़ताल की जा रही है कि कहीं अवैध विद्युत फेसिंग या करंट प्रवाहित तार तो मौत का कारण नहीं बने। पोस्टमार्टम के बाद ही आगे की कार्रवाई और मौत की वास्तविक वजह सामने आएगी।

दुष्कर्म के मामले में फरार आरोपी गिरफ्तार

धार। महिला संबंधी अपराध में कार्रवाई करते हुए धामनोद पुलिस ने दुष्कर्म के मामले में फरार चल रहे 21 वर्षीय आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार 24 सितंबर को पीड़िता खेत में भुड़े लेने गई थी। इसी दौरान ग्राम ब्रह्मकुंडी निवासी हेमंत पिता प्रकाश बड़तिया उसे कथित तौर पर पास के मक्का के खेत में ले गया और दुष्कर्म किया। पीड़िता की शिकायत पर धामनोद थाने में अपराध क्रमांक 471/2026, धारा 64(1) बीएनएस के तहत प्रकरण दर्ज किया गया था। पुलिस अधीक्षक सचिन शर्मा के निर्देश और एसपी विजय डाबर के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी संतोषसिंह यादव के नेतृत्व में टीम गठित की गई। मुखबिर सूचना और तत्कनीकी सक्ष्यों के आधार पर आरोपी को पकड़ा गया। पूछताछ के बाद उसे विधिवत गिरफ्तार कर लिया गया।

पेरिस का दर्द पीछे छोड़ा, एशियन गेम्स के फाइनल में खुद को साबित किया

मां की डांट से बदला खेल का रंग, दबाव को मात देकर ईशा ने जीता सिल्वर

नई दिल्ली, एजेंसी

एशियन गेम्स में 25 मीटर पिस्टल का फाइनल भारतीय निशानेबाज ईशा सिंह के लिए सिर्फ पदक जीतने की चुनौती नहीं था, बल्कि यह खुद के भीतर चल रही एक लंबी लड़ाई का भी जवाब था। पेरिस ओलंपिक के बाद से जिस दबाव और तनाव ने उनका पीछा किया, उसी दबाव के बीच ईशा ने इस बार खुद को संभाला और रजत पदक अपने नाम किया। फाइनल से एक रात पहले तक उन्हें नींद नहीं आ रही थी। मुकाबले का तनाव इतना ज्यादा था कि उन्हें मां से बात करनी पड़ी। लेकिन मां ने प्यार से समझाने के बजाय जमकर डांट लगाई और कहा कि इस मौके को तनाव में नहीं, बल्कि आनंद लेकर खेलो।

21 वर्षीय ईशा ने बताया कि वह फाइनल से पहले बेहद दबाव महसूस कर रही थीं। मां से फोन पर बात हुई तो उन्होंने पूछा कि इतना तनाव क्यों ले रही हो। उन्होंने समझाया कि हर किसी को ऐसे बड़े मंच पर खेलने का मौका नहीं मिलता। ईशा के मुताबिक, उन्हें उस समय सहानुभूति की उम्मीद थी, लेकिन मां ने पूरा लेकर दे दिया। आखिर में साफ शब्दों में कहा- ‘चुप करो और सो जाओ।’ ईशा मानती हैं कि उस समय उन्हें इसी डांट की जरूरत थी।

मुरिकलों के बीच वापसी

अगले दिन फाइनल में उतरी तो दबाव साफ था, लेकिन हिम्मत नहीं टूटी। शुरुआत में ईशा ने बढ़त बनाई। इसके बाद उनकी लय बिगड़ी और कई मौकों पर बाहर होने का खतरा भी बना। इसके बावजूद उन्होंने अपना ध्यान लक्ष्य पर बनाए रखा। ईशा ने कहा कि मुकाबले के दौरान बार-बार यह विचार परेशान करता है कि अगले ही पल आप बाहर हो सकते हैं। फिर भी उन्होंने खुद पर भरोसा रखा और आखिरी तक लड़ती रही।

थक गया था शूटिंग वाला हाथ

25 मीटर पिस्टल का फाइनल इतना लंबा और तनावपूर्ण रहा कि ईशा का शूटिंग वाला हाथ भी जवाब देने लगा। वह बार-बार हाथ झटकती और कलाई घुमाती नजर आई। ईशा ने बताया कि गोल्ड की दौड़ में शामिल खिलाड़ियों में उन्होंने सबसे ज्यादा शूट किया, इसलिए उनका हाथ काफी कड़ा और थका हुआ महसूस हो रहा था। फाइनल के दौरान जजों की कुछ गलतियों ने भी ईशा को थोड़ी राहत दी। जहां ऐसी गलतियां सामान्य तौर पर मुकाबले का हिस्सा होती हैं, वहीं ईशा के लिए इससे कुछ अतिरिक्त समय मिल गया। उन्होंने इसे भगवान की कृपा तक बताया। ईशा के मुताबिक, उन घटनाओं से उन्हें कुछ देर रुककर सोचने और खुद को संभालने का मौका मिला।

पेरिस के दबाव का इस बार दिया जवाब

ईशा के लिए यह पदक इसलिए भी खास है क्योंकि पेरिस ओलंपिक में वह इसी तरह के दबाव से बाहर नहीं निकल पाई थीं। इस बार परिस्थितियां फिर चुनौतीपूर्ण थीं। कालिफिकेशन में आठवें स्थान पर रहकर उन्होंने फाइनल में जगह बनाई थी और अपने प्रदर्शन से संतुष्ट नहीं थी। लेकिन उसी दौरान मिली वापसी की ताकत ने फाइनल में उनका आत्मविश्वास बढ़ाया। ईशा ने कहा कि यह दबाव उनके लिए ओलंपिक स्तर का था और इस अनुभव ने उन्हें यह समझने में मदद की कि वह पहले से ज्यादा मजबूत हैं। फाइनल की आखिरी सीरीज ने भी उन्हें अपने बारे में बड़ा जवाब दिया। उन्हें महसूस हुआ कि वह इतने बड़े दबाव को संभाल सकती हैं।

विराट की तूफानी पारी ने मचाई सनसनी, पाकिस्तानी भी हुए मुरीद

कामरान अकमल ने रन मशीन को बताया बेमिसाल, बोले- हर दौर में खुद को निखारा

नई दिल्ली, एजेंसी

तिरुवनंतपुरम में वेस्टइंडीज के खिलाफ खेले गए पहले एकदिवसीय मुकाबले में विराट कोहली ने एक बार फिर अपने बल्ले की ताकत का शानदार प्रदर्शन किया। कोहली ने मैदान के चारों ओर बेहतरीन शॉट लगाते हुए गेंदबाजों की जमकर खबर ली और नाबाद 139 रन की यादगार पारी खेली। उनकी इस पारी ने न केवल भारतीय क्रिकेट प्रशंसकों का दिल जीता, बल्कि पड़ोसी देश पाकिस्तान में भी उनकी चर्चा होने लगी। कोहली ने अपनी पारी के दौरान 88 गेंदों का सामना किया और 10 चौकों तथा 9 छक्कों की मदद से नाबाद 139 रन बनाए। उनकी आक्रामक बल्लेबाजी के सामने वेस्टइंडीज के गेंदबाज लगातार दबाव में दिखाई दिए। कोहली ने शुरुआत से ही रन बनाने की रफ्तार बनाए रखी और मैदान के लगभग हर हिस्से में आकर्षक शॉट लगाए।

समय के साथ किया खेल में बदलाव

विराट कोहली की इस शानदार पारी के बाद पाकिस्तान के पूर्व विकेटकीपर-बल्लेबाज कामरान अकमल ने उनको खूब प्रशंसा की। अकमल के मुताबिक, कोहली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने समय के साथ अपने खेल में लगातार बदलाव और सुधार किया है। अकमल ने कहा कि क्रिकेट के बदलते दौर में विराट कोहली ने स्वयं को परिस्थितियों के अनुरूप ढालने की क्षमता दिखाई है। वह अपने खेल को किसी एक शैली तक सीमित नहीं रखते और जरूरत के मुताबिक बल्लेबाजी का तरीका बदल लेते हैं।

हर साल निखरता गया कोहली का खेल

कामरान अकमल ने विराट की सफलता के पीछे उनकी मेहनत और लगातार सीखने की प्रवृत्ति को अहम बताया। उन्होंने कहा कि कोहली आज उसी अंदाज में बल्लेबाजी नहीं करते, जिस तरह उन्होंने अपने अंतरराष्ट्रीय करियर की शुरुआत की थी। समय के साथ उन्होंने अपने खेल के अलग-अलग पहलुओं को बेहतर किया है। अकमल के अनुसार, विराट की शानदार शारीरिक क्षमता, खेल की गहरी समझ और मुकाबले का रुख बदलने की क्षमता उन्हें अलग पहचान देती है। युवा क्रिकेटर्स के लिए भी उनका करियर मेहनत, अनुशासन और लगातार सुधार की मिसाल है।

एक पारी में कई बड़ी उपलब्धियां

27 सितंबर को खेले गए मुकाबले में विराट कोहली ने अपनी नाबाद 139 रन की पारी के दौरान कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल कीं। उन्होंने एकदिवसीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपना 55वां शतक पूरा किया। इस पारी में कोहली ने आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए 10 चौके और 9 छक्के लगाए। इसी मुकाबले के दौरान विराट कोहली ने एकदिवसीय क्रिकेट में 15 हजार रन पूरे करने की उपलब्धि भी हासिल की। उन्होंने यह मुकाम सबसे तेज हासिल करने वाले बल्लेबाज के रूप में अपना नाम दर्ज कराया।

विराट कोहली ने स्वयं को परिस्थितियों के अनुरूप ढालने की क्षमता दिखाई है। वह अपने खेल को किसी एक शैली तक सीमित नहीं रखते और जरूरत के मुताबिक बल्लेबाजी का तरीका बदल लेते हैं।

कोहली का खेल हर साल निखरता गया है। उन्होंने समय के साथ अपने खेल में लगातार बदलाव और सुधार किया है। अकमल ने कहा कि क्रिकेट के बदलते दौर में विराट कोहली ने स्वयं को परिस्थितियों के अनुरूप ढालने की क्षमता दिखाई है। वह अपने खेल को किसी एक शैली तक सीमित नहीं रखते और जरूरत के मुताबिक बल्लेबाजी का तरीका बदल लेते हैं।

मनोरंजन

बॉलीवुड का कोना

सहायक निर्देशक से अभिनेत्री बनने तक का सफर

माधुरी के गानों पर डांस करती थीं शरवरी वाघ, अब बड़े पर्दे पर बनेंगी ‘हीरोइन’

बॉलीवुड में सहायक निर्देशक से अपने करियर की शुरुआत करने वाली अभिनेत्री शरवरी वाघ पारिवारिक ड्रामा फिल्म ये प्रेम मोल लिया में नजर आएंगी। अभिनेत्री का कहना है कि बॉलीवुड के गाने और डांस ने ही उन्हें अभिनेत्री बनने के लिए प्रेरित किया। अभिनेत्री ने कहा, बॉलीवुड के गाने और डांस ही एक बड़ी वजह है कि मैं अभिनेत्री बनना चाहती थी। साथ ही, मैं माधुरी दीक्षित को दीदी तेरा देवर दीवाना में और करिश्मा मैम और सोनाली मेंम को मैथ्या यशोदा में देखते हुए बड़ी हुई हूं और मैं घर आकर इन गानों पर डांस करती थी और खुद को एक दिन स्क्रीन पर उस हीरोइन के रूप में कल्पना करती थी।

गानों पर डांस करते-करते बॉलीवुड से हुआ प्यार- अभिनेत्री ने इन पलों को बॉलीवुड से प्यार होने की वजह बताया। उन्होंने कहा, +मुझे लगता है कि कहीं न कहीं, इन्हीं पलों ने मुझे बॉलीवुड के विचार से प्यार करना सिखाया।+ शरवरी के मुताबिक, बचपन में फिल्मों

‘गाने और डांस के जरिए पूरी कहानी बता सकते हैं’

अभिनेत्री ने बताया कि उन्हें पर्दे पर हमेशा से ही रोमांस करना पसंद है। अभिनेत्री शरवरी वाघ ने बताया, मुझे हमेशा से क्लासिक बॉलीवुड गानों का रोमांस, इमोशन और बड़े पर्दे वाला जादू पसंद रहा है, जिस तरह से आप एक गाने और डांस के जरिए पूरी कहानी बता सकते हैं। इसलिए सूरज बड़जात्या जी की ये प्रेम मोल लिया के साथ इसका अनुभव करना अविश्वसनीय रूप से खास लग रहा है। शरवरी ने कहा, यह एक खुबसूरत पल जैसा लग रहा है, उस तरह के बॉलीवुड की जीने का, जिसे देखते हुए और जिसके सपने देखते हुए मैं बड़ी हुई हूं।

बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन और उनके बेटे अभिषेक बच्चन का रिश्ता हमेशा से ही लोगों की दिलचस्पी का हिस्सा रहा है। दोनों ने फिल्मों में अपनी अलग पहचान बनाई है और कई बार एक-दूसरे के काम और सोच को लेकर खुलकर बात भी की है। अब अमिताभ बच्चन ने अपने ब्लॉग पर अभिषेक के साथ अपने रिश्ते को लेकर खास बातें लिखी है। उन्होंने कहा कि पिता और बेटे की सोच अलग हो सकती है, दोनों का चीजों को देखने का नजरिया अलग हो सकता है, लेकिन आखिर में उनकी मंजिल एक ही रहती है।

अमिताभ बच्चन ने अपने ब्लॉग में लिखा, पिता पुत्र दोनों रहे, एक मंच पर बैठें, विचार अलग-अलग हो चाहे, मंजिल के ही ऐंठो। इस बात के जरिए उन्होंने कहा कि एक ही परिवार में होने के बावजूद दो पीढ़ियों की सोच हमेशा एक जैसी हो, यह जरूरी नहीं है। इसके बावजूद एक-दूसरे के लिए सम्मान और रिश्ते की अहमियत बनी रह सकती है।

अमिताभ ने आगे लिखा, मैं नई पीढ़ी का हमेशा सम्मान करता हूं। विचार और रास्ते अलग होने के बावजूद मंजिल एक ही रहती है। हर रास्ते का मकसद एक ऐसी मंजिल तक

अभिषेक के रिश्ते को लेकर लिखा, यह रिश्ता एक-दूसरे को जानने, समझने, खोजने और ऐसी मंजिल तय करने का रहा है, जो सभी के लिए बेहतर हो। प्यार और सम्मान को इस रिश्ते का अहम हिस्सा है। शुभचिंतकों का प्यार।

अमिताभ बच्चन की इन बातों में पिता-पुत्र के रिश्ते के साथ-साथ दो पीढ़ियों के बीच विचारों के अंतर को भी जगह मिली है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सोच, विचार और रास्ते अलग होने के बावजूद किसी रिश्ते में सम्मान और आपसी समझ कायम रह सकती है।

भारत में आईपीओ के जरिए पूंजी जुटाने का रुझान मजबूत

3.86 लाख करोड़ रुपए की पाइपलाइन से बढ़ा भरोसा

नई दिल्ली । भारत का प्राइमरी मार्केट अब केवल समय-समय पर आने वाले आईपीओ तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह पूंजी निर्माण (कैपिटल फॉर्मेशन) का एक मजबूत और स्थायी माध्यम बनकर उभर रहा है। एसोसिएशन ऑफ इन्वेस्टमेंट बैंकर्स ऑफ इंडिया (एआईबीआई) के अनुसार, देश में मेनबोर्ड आईपीओ की पाइपलाइन लगभग 3।86 लाख करोड़ रुपए तक पहुंच गई है, जो इस वर्ष अब तक 84 मेनबोर्ड आईपीओ के जरिए जुटाए गए 1।110 लाख करोड़ रुपए से करीब साढ़े तीन गुना अधिक है।

एआईबीआई ने अपने बयान में कहा कि इस पाइपलाइन में करीब 130 कंपनियां शामिल हैं जिन्हें पहले ही सेबी की मंजूरी मिल चुकी है, जबकि लगभग 75 अन्य कंपनियों ने ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दाखिल कर दिया है और नियामकीय मंजूरी की प्रतीक्षा कर रही हैं। उद्योग संगठन के मुताबिक, इतनी बड़ी पाइपलाइन यह संकेत देती है कि कंपनियों की सार्वजनिक बाजारों के जरिए पूंजी जुटाने में रुचि लगातार बनी हुई है। साथ ही यह आने वाले समय में भारतीय प्राइमरी मार्केट की गहराई और क्षमता को भी दर्शाती है। एआईबीआई के चेयरमैन महावीर लुनावत ने कहा कि संस्थागत निवेशकों (क्यूआईबी), उच्च निवल मूल्य वाले निवेशकों (एचएनआई) और खुदरा निवेशकों की बढ़ती भागीदारी यह दिखाती है कि प्राइमरी मार्केट अब अधिक व्यापक और दीर्घकालिक पूंजी निर्माण का माध्यम बनता जा रहा है।

भारत में 25 करोड़ लोग हेल्थ कवर के दायरे में, दावा- 80 करोड़ को मिल रहा मुफ्त अनाज

नई दिल्ली । केंद्रीय श्रम और रोजगार मंत्री मनसुख मंडाविया ने दावा किया है कि भारत में कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) के जरिए 25 करोड़ लोगों को हेल्थ कवर मिल रहा है। इतना ही नहीं औद्योगिक संबंध और श्रम एवं पुरस्कार 2026 पर सीआईआई-ईएफआई राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने केन्द्र सरकार द्वारा 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज भी उपलब्ध कराने का दावा किया। साथ ही मंडाविया ने यह भी बताया कि 10 करोड़ किसानों को हर चार महीने में उनके बैंक खातों में सीधे 2,000 रुपए मिलते हैं।

केन्द्रीय मंत्री ने कहा, आज देश में 10 ऐसे राज्य हैं, जो महिलाओं के खातों में हर महीने 2,000 रुपए, 1,500 रुपए या 1,200 रुपए जैसी रकम जमा करते हैं। केंद्रीय मंत्री ने औद्योगिक संबंधों और अंतरराष्ट्रीय श्रम तौर-तरीकों एवं भारत की अपनी परंपराओं और प्रणालियों के बीच संतुलन पर बात करते हुए कहा, जब हम औद्योगिक संबंधों की बात करते हैं।। तो एक तरफ आईएलओ के अंतरराष्ट्रीय तौर-तरीके और अंतरराष्ट्रीय ढांचे होते हैं, और दूसरी तरफ भारत की अपनी परंपराएं और संबंध तो मुझे यह थोड़ा अलग लगता है।

मंडाविया ने कहा कि पिछले 10-11 वर्षों में कई मंत्रालयों में मंत्री के तौर पर काम करने के उनके अनुभव ने उन्हें भारत और विदेशों में विभिन्न मंचों और विधाओं के साथ जुड़ने का मौका दिया है। उन्होंने कहा कि औद्योगिक संबंधों के प्रति भारत के दृष्टिकोण में अंतरराष्ट्रीय ढांचे और देश के अपने सामाजिक और आर्थिक संदर्भ, दोनों को ध्यान में रखने की जरूरत है। मंत्री के मुताबिक, श्रम क्षेत्र में नीतियां और व्यवस्थाएं तैयार करते समय अंतरराष्ट्रीय श्रम मानकों के साथ-साथ देश की परिस्थितियों और सामाजिक ढांचे को भी ध्यान में रखा जाना जरूरी है।



ओडिशा के पारादीप बंदरगाह से बलरामपुर चीनी मिल लिमिटेड की लखीमपुर स्थित इकाई के लिए 200 टन वजनी वेसल (वैक्यूम बॉयलर) लेकर निकला 308 पहियों वाला मल्टी-एक्सल ट्रेलर सोमवार को चंदौली से बनारस पहुंच गया। करीब 100 फीट लंबे और सात मीटर चौड़े इस

भीमकाय ट्रेलर का रास्ता बनाने में जिला प्रशासन, ट्रैफिक पुलिस, बिजली, एनएचआइ समेत कई विभागों की टीमें लगी हैं। वैक्यूम बायलर को ले जाने में दो अतिरिक्त ट्रेलर और दो क्रेन भी साथ चल रहे हैं। काफिले में 64 से अधिक इंजीनियर और तकनीकी कर्मचारी हैं। जहां सड़क की

चौड़ाई कम है, वहां निर्माण तोड़कर सड़क चौड़ी की जा रही है या बगल में वैकल्पिक रास्ता तैयार किया जा रहा है। बिजली के तार, खंभे, स्ट्रीट लाइट और साइनेज हटाए जा रहे हैं। वाराणसी में डाफो टोल प्लाजा के पास सड़क का हिस्सा तोड़कर रास्ता चौड़ा किया गया है।



ओडिशा: महानदी का जलस्तर बढ़ने से मंडराया बाढ़ का खतरा

ओडिशा, एजेंसी। ओडिशा सरकार ने पिछले चार दिनों में लगभग 1.4 लाख लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया है, क्योंकि बाढ़ की एक नई लहर ने कई जिलों को प्रभावित किया है। यह जानकारी अधिकारियों ने दी। राजस्व और आपदा प्रबंधन मंत्री सुरेश पुजारी ने सोमवार को बताया कि सरकार ने 1,360 ग्राम पंचायतों के अंतर्गत आने वाले 7,834 गांवों के निचले इलाकों से 1.4 लाख लोगों को सुरक्षित निकाला है। इसके अलावा, 38 शहरी स्थानीय निकायों के 219 वार्ड भी प्रभावित हुए हैं। अधिकारियों ने बताया कि हीराकुंड बांध से अतिरिक्त पानी छोड़े जाने के बाद महानदी नदी में भी मामूली बाढ़ की स्थिति बनी। यह नदी घनी आबादी वाले तटीय जिलों से होकर गुजरती है।

सरकारी स्कूल के हेडमास्टर और पत्नी की हत्या, घर में मिले शव

सुलतानपुर, एजेंसी। कादीपुर के कुंभी डड्डिया गांव में सोमवार रात अज्ञात बदमाशों ने 48 वर्षीय प्रधानाध्यापक मुकेश सिंह और उनकी 45 वर्षीय पत्नी विनीता सिंह की हत्या कर दी। पत्नी गांव में निजी विद्यालय का संचालन करती थी। मुकेश और विनीता निजी विद्यालय परिसर स्थित आवास में ही रहते थे। वह कंपोजिट विद्यालय खनुहट में तैनात थे। साथ ही मोतिगरपुर प्राथमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष भी थे। घटना के बाद से गांव में दहशत का माहौल है। सूचना पर पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल, अपर पुलिस अधीक्षक वृज नारायण सिंह ने घटनास्थल का निरीक्षण किया है। पुलिस अधीक्षक विनीत जायसवाल ने बताया कि सुबह पुलिस को दो लोगों के शव मिलने की सूचना मिली थी। तत्काल टीम ने मौके पर पहुंचकर छानबीन शुरू की। प्रथम दृष्टया गला रेतकर हत्या किए जाने की बात सामने आई है।

कैलिफोर्निया में एनवायटी के ट्रांस एग्जीक्यूटिव की हत्या

वाशिंगटन, एजेंसी। कैलिफोर्निया के स्पोर्ट्स पार्क में न्यूयॉर्क टाइम्स के एक टेक एग्जीक्यूटिव जोनाथन मैकिन्से को गोली मारकर हत्या कर दी गई है। इस हत्या का आरोप उनके ही ससुराल वालों पर लगा है। न्यूयॉर्क टाइम्स में गेम्स प्लेयर एक्सपीरियंस के इंजीनियरिंग हेड, जोनाथन मैकिन्से अपनी पत्नी से अलग रह रहे थे। उनका अपने ससुराल वालों के साथ ट्रांसजेंडर होने को लेकर विवाद चल रहा था। पुलिस ने इस जानलेवा गोलीबारी के लिए जोनाथन मैकिन्से के ससुराल वालों, 76 वर्षीय शौयोग झांग और शिली चैन को गिरफ्तार किया है। कैलिफोर्निया के डबलिन में स्थित एथलेटिक कॉम्प्लेक्स और प्लेग्राउंड, डबलिन स्पोर्ट्स ग्राउंड्स की पार्किंग में यह घटना हुई। पुलिस ने अभी तक इस अपराध के पीछे की वजह का खुलासा नहीं किया है। न्यूयॉर्क टाइम्स के एक प्रवक्ता ने पुष्टि की है कि मैकिन्से, जो 2023 से अखबार के लिए काम कर रहे थे, शनिवार दोपहर हुई गोलीबारी का शिकार हुए थे। मैकिन्से के लिंकडइन प्रोफाइल से पता चलता है कि उनका टेक क्षेत्र में लगभग दो दशकों का करियर था और उन्होंने स्लैक, कोर्सेरा और ओरेकल जैसी कई टेक कंपनियों के लिए भी काम किया था।

भारत-यूएस संबंधों पर जयशंकर का बड़ा बयान

आतंकवाद पर हमारी चिंता को लेकर अमेरिका गंभीर नहीं

नई दिल्ली। एजेंसी। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने अमेरिका को लेकर एक बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि भारत की सुरक्षा प्राथमिकताओं को लेकर अमेरिका गंभीर नहीं है और ये ही दोनों देशों के संबंधों में बड़ी बाधा है। जयशंकर ने परोक्ष रूप से पाकिस्तान को सीमापार आतंकवाद के लिए जिम्मेदार ठहराया और अमेरिका द्वारा पाकिस्तान के खिलाफ ठोस कार्रवाई नहीं करने को लेकर नाराजगी भी जाहिर की। जयशंकर अमेरिका द्वारे पर हैं और वहां उन्होंने न्यूयॉर्क में एशिया सोसाइटी द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित किया। इस कार्यक्रम में जयशंकर ने बताया कि किन वजहों से भारत और अमेरिका के संबंधों में अभी भी कुछ बेरुखी क्यों है?

‘राम अमीरों के, शिव गरीबों के भगवान’ तेलंगाना सीएम के बयान पर बवाल

नई दिल्ली, एजेंसी। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने अपने एक बयान से नई सियासी बहस छेड़ दी है। दरअसल उन्होंने भगवान राम और भगवान शिव को लेकर द्रविड़ और आर्यों के बीच का कथित अंतर बताया, जिस पर भाजपा ने तीखा पलटवार करते हुए इसे हिंदुओं को बांटने की साजिश बता दिया है। राष्ट्रीय राजधानी में एक मीडिया कार्यक्रम को संबोधित करते हुए तेलंगाना सीएम रेवंत रेड्डी ने भाजपा की ओर से बार-बार लगाए जाने वाले ‘जय श्री राम’ के नारे पर सवाल उठाया। उन्होंने पूछा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा के अन्य नेता ‘हर हर महादेव’ का नारा क्यों नहीं लगाते? रेवंत रेड्डी ने कहा, ‘हम द्रविड़ हैं। यहां (उत्तर भारत में) लोग आर्य हैं। हम शिव के भक्त हैं, जबकि यहां लोग भगवान राम के भक्त हैं। भाजपा ने राम को चुरा लिया। यह एक भावना है, एक संवेदना है। मोदी जी ‘हर हर महादेव’ क्यों नहीं कहते? क्या आपने कभी भाजपा के लोगों को मंच पर ‘हर हर महादेव’ कहते देखा है? वे केवल ‘जय श्री राम’ कहते हैं।

मेट्रो एंकर भारतीय कंपनी की अमेरिका में 18 अरब डॉलर का निवेश करने की योजना

अमेरिका में एस्सार ग्रुप बनाएगा सबसे बड़ा स्टील प्लांट: ट्रंप

वॉशिंगटन। एजेंसी। विदेश में किए जा रहे सबसे बड़े निवेशों में से एक के तहत भारत का एस्सार ग्रुप अमेरिका में 18 अरब डॉलर का निवेश करने की योजना बना रहा है। इसमें आयोवा में 15 अरब डॉलर की लागत वाला स्टील प्लांट भी शामिल है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ओवल ऑफिस में आयोजित एक कार्यक्रम में आयोवा प्रोजेक्ट की घोषणा की। इस कार्यक्रम में रूढ़्या परिवार के सदस्य भी मौजूद थे, जिनका यह ग्रुप है। एस्सार की अमेरिकी सब्सिडियरी मेसाबी मेटालिक्स इस प्लांट को तैयार करेगी। उम्मीद है कि यह अमेरिका में एक इंटीग्रेटेड स्टील सप्लाई चैन का हिस्सा बनेगा, जिसमें मिनिसोटा में कंपनी के ऑपरेशन्स से लौह अयस्क आएगा।



‘अमेरिकी इतिहास का सबसे बड़ा स्टील प्लांट होगा’

ट्रंप ने कहा कि यह अमेरिकी इतिहास का सबसे बड़ा स्टील प्लांट होगा। उन्होंने इसे एक अहम बैटलग्राउंड स्टेट (चुनावी रूप से अहम राज्य) में आर्थिक जीत के तौर पर पेश किया, जहां रिपब्लिकन पार्टी को कड़े मिड-टर्म चुनावों का सामना करना पड़ रहा है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, ‘आज हमें यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि मेसाबी मेटालिक्स आयोवा राज्य में अमेरिका के इतिहास का सबसे बड़ा स्टील प्लांट बनाएगा। यह न सिर्फ अमेरिका का, बल्कि दुनिया के सबसे बड़े स्टील प्लांटों में से एक होगा।’

‘आयोग किसी प्राइवेट पार्टी के इशारे पर चलेगा, तो फिर बचेगा क्या’

टीएमसी सिंबल विवाद पर कलकत्ता सुप्रीम कोर्ट सख्त कोलकाता। एजेंसी

लिफाफा चुनाव चिह्न विवाद पर कलकत्ता हाई कोर्ट में सुनवाई पूरी हो गई है। न्यायमूर्ति कृष्ण राव ने फैसला सुरक्षित रख लिया है। अब यह तय होना है कि नंदीग्राम और रेंजिनागर उपचुनाव में लिफाफा चुनाव चिह्न किसे मिलेगा। इंडियन सेक्यूलर फ्रंट (आइएसएफ) के विधायक नौशाद सिद्दीकी ने चुनाव आयोग के उस अंतरिम निर्देश को चुनौती दी है, जिसमें लिफाफा चिह्न ऋतब्रत शिबिर को दिया गया है।

कलकत्ता हाई कोर्ट ने चुनाव आयोग से पूछे सवाल

सुनवाई के दौरान अदालत ने आयोग से पूछा कि विधानसभा चुनाव में किसी दल द्वारा इस्तेमाल किए गए चिह्न को दूसरे पक्ष को देने का आधार क्या है। न्यायमूर्ति ने यह भी सवाल किया कि जब दो लोग एक ही चिह्न के लिए आवेदन करें तो आयोग किस आधार पर एक को चिह्न आवंटित करता है। जस्टिस कृष्णा राव ने ईसी के वकील से कहा, ‘पार्टियों का व्यवहार उनके बीच मिलीभगत को दिखाता है। अगर ईसीआई किसी प्राइवेट पार्टी के



कहने पर काम कर रही है, तो फिर बचा ही क्या? आप किसी प्राइवेट पार्टी से मदद नहीं ले सकते।’ इस पर वकील ने साफ किया कि उन्हें ‘डेमोक्रेटिक तुणमूल के वकील से कोई निर्देश नहीं मिल रहा था।

अदालत ने कहा कि चुनाव आयोग संवैधानिक संस्था है और उसके फैसले निष्पक्ष होने चाहिए। आयोग ने जवाब में कहा कि किसी राजनीतिक दल को एक ही मुक्त चुनाव चिह्न दो बार से अधिक नहीं दिया जा सकता और किसी चिह्न पर किसी का स्वामित्व नहीं होता। सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा कि आयोग को ऐसा फैसला करना चाहिए था जिससे विवाद की स्थिति न बने और बाद में मामला अदालत तक न पहुंचे। सभी पक्षों की दलीलें सुनने के बाद न्यायमूर्ति कृष्ण राव ने फैसला सुरक्षित रख लिया।

दिल्ली: सीईसी के खिलाफ जंतर मंतर पर प्रदर्शन को पुलिस से अनुमति नहीं

दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली पुलिस के सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि एसआईआर मामले पर विपक्ष के बढ़ते विरोध के बीच मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार के खिलाफ 2 अक्टूबर को जंतर-मंतर पर विरोध प्रदर्शन के लिए दिल्ली पुलिस ने अभी तक कोई मंजूरी नहीं दी है। समाचार एजेंसी एएनआई ने दिल्ली पुलिस के सूत्रों के हवाले से बताया कि प्रदर्शन के लिए अब तक कोई भी अनुमति जारी नहीं की गई है। एसआईआर को लेकर विपक्ष और विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा ये प्रदर्शन 2 अक्टूबर को जंतर मंतर पर किया जाना था। आम आदमी पार्टी दिल्ली के अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने सोमवार को लोगों से जंतर-मंतर पर होने वाले विरोध प्रदर्शन में शामिल होने की अपील की थी। विपक्ष के अन्य दलों और संगठनों के भी इस प्रदर्शन में शामिल होने या अलग से प्रदर्शन करने की संभावना है। मुंबई पुलिस ने चुनाव आयोग और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ दो अक्टूबर को शिवाजी पार्क में होने वाले कॉन्फ्रेंस जनता पार्टी (सीजेपी) के प्रदर्शन को मंजूरी देने से इनकार कर दिया है।



इन नाकों पर जाम की समस्या

इसके बाद अब एमसीडी दिल्ली के टोल नाकों पर मल्टी लेन फ्री प्लो (एमएलएफएफ) सिस्टम को लागू करने की दिशा में आगे बढ़ गई है। एमसीडी के अनुसार, वह अगले दो माह में इस व्यवस्था को पूरी तरह से लागू कर देगी। यहां लगे ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन कैमरों में वाहन बिना रुके टोल आनलाइन चुकता करके निकल सकेगें।